

ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -24

अंक - 02

अप्रैल-II-2022



(पाक्षिक)

माउण्ट आबू

Rs. 8.50

महाशिवरात्रि पर सांसद अजय निषाद ने कहा...

यहाँ आकर पूरी होती है सुख-शांति की मंगलकामना

मुजफ्फरपुर विहार। ब्रह्माकुमारीज के सुख-शांति भवन सभागार, आमगोला रोड में आयोजित 86वीं त्रिमूर्ति शिव जयन्ती महोत्सव में राजयोगिनी ब्र.कु. रानी दीदी ने शिवरात्रि का अर्थ स्पष्ट करते हुए कहा कि धरती पर जब अति धर्म ग्लानि होती है, कलियुग के अंत में घोर अज्ञान रात्रि के समय निराकार परमपिता परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा ज्ञान देकर, नारी शक्ति को आधार बनाकर मनुष्यों को

सुख चाहिए तो हमें अध्यात्म की शरण में जाना होगा। सर्व शक्तियों के स्रोत परमात्मा शिव से सम्बंध जोड़कर अपने को चार्ज करें और अपने श्रेष्ठ कार्यों द्वारा बेहतर समाज का निर्माण करें। जिला एवं सत्र न्यायाधीश पुनीत कुमार गर्ग ने कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्था जीवन जीने का मार्ग दर्शाती है। इस मार्ग पर व्यक्ति चले तो तनावमुक्त होकर सफल जीवन की अनुभूति होती है। एसएसबी मुजफ्फरपुर



आत्म-अनुभूति कराते और पवित्रता की धारणा कराकर मनोविकारों से मुक्त कराते हैं। शिव पर भांग-धतूरा चढ़ाने का अर्थ है मन की बुराइयां शिव बाबा को अर्पित करना। सांसद अजय निषाद ने कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्थान में आकर मैंने जाना कि भगवान शिव बाबा किस तरह हमारी प्रार्थना, हमारे दिल की बात सुनते हैं और हमारे सुख-शांति की मंगल कामना पूर्ण होती है। विधायक विजेन्द्र चौधरी ने कहा कि आज के दिन हम ईश्वर से यही प्रार्थना करते हैं कि वे हम सभी को सदबुद्धि दें। विश्व में शांति और भाईचारे की स्थापना हो। कुदनी विधायक डॉ. अनिल साहनी ने कहा कि राजयोग मेडिटेशन का प्रतिदिन अभ्यास करें तो सब प्रकार की दुःख-दुविधा दूर हो जायेगी। जिलाधिकारी प्रणव कुमार ने कहा कि यदि आत्मिक शांति और

के डीआईजी के. रणजीत ने कहा कि राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास सुरक्षा सेवा में भी मददगार होता है। सेवा के द्वारा विभिन्न स्थानों पर मानव सहायता पहुंचाने में मुझे स्वयं आत्मिक बल की अनुभूति हुई है। ब्र.कु. भारत भूषण बंसल ने सभी का स्वागत किया। संचालन ब्र.कु. भास्कर भाई ने तथा धन्यवाद ज्ञापन ब्र.कु. सीता बहन ने किया। इस मौके पर पूर्व जिला एवं सत्र न्यायाधीश राजीव रोशन सिंह, डॉ. राम जी प्रसाद, डॉ. जलेश्वर प्रसाद, डॉ. एच.एन. भारद्वाज, डॉ. ललन तिवारी, त्रिलोकी प्रसाद वर्मा, प्रो. आनंद स्वरूप सिंह, डॉ. सुधा भारती आदि गणमान्य लोगों सहित सैकड़ों भाई-बहनें उपस्थित रहे।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर 'महिलाएं : स्वर्णिम भारत की ध्वजवाहक' संगोष्ठी

आध्यात्मिक ज्ञान अपनाने से महिलायें होंगी सशक्त

मोहाली-पंजाब। ब्रह्माकुमारीज के सुख शांति भवन में 'आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' परियोजना के अंतर्गत अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर 'महिलाएं : स्वर्णिम भारत की ध्वजवाहक' विषयक संगोष्ठी में श्रीमति बलदीप कौर, आईएस, विशेष सचिव, गृह, पंजाब सरकार ने समाज उत्थान के लिए ब्रह्माकुमारी बहनों द्वारा निभाई गई महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर देते हुए कहा कि आत्मा के प्रति जागरूक होकर हम परिवार तथा समाज में एक-दूसरे के साथ अच्छा सम्बंध बना सकते हैं। पंजाब राज्य महिला आयोग की पूर्व चेयरपर्सन एवं एसजीपीसी की सदस्य बीबी परमजीत कौर लांडरान ने पीएसडब्ल्यूसी की चेयरपर्सन के रूप में काम करते हुए समय-समय पर आने वाली चुनौतियों में अपने सोचने के तरीके को बदलने और आशावादी होने में राजयोग ध्यान की महत्वपूर्ण भूमिका के बारे में बताया। डॉ. जपलीन कौर, असिस्टेंट प्रोफेसर,



ऑब्सटेट्रिशियन एंड गायनेकोलॉजिस्ट ने समाज को सभी के रहने के लिए एक बेहतर जगह बनाने हेतु लैंगिक समानता की बात कही। पंजाब स्टेट लीगल सर्विसेज अथॉरिटी के अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश मनदीप मित्तल ने कहा कि समाज में एक सराहनीय बदलाव लाने के लिए आत्म परिवर्तन बहुत महत्वपूर्ण है। ब्र.कु. डॉ. रमा बहन, संचालिका, ब्रह्माकुमारीज, रूप नगर सेवाकेन्द्र ने कहा कि स्वर्णिम भारत लाने में भौतिक प्रगति

के साथ-साथ प्रेम, शांति, संतुष्टता जैसे मूल्यों का समावेश जीवन में आवश्यक है। अध्यात्म के साथ शिक्षा सभी क्षेत्रों में अद्भुत परिणाम ला सकती है। ब्र.कु. प्रेमलता बहन, संचालिका, ब्रह्माकुमारीज, मोहाली-रोपड़ सर्कल ने कहा कि केवल आध्यात्मिकता और राजयोग ध्यान ही महिलाओं को करुणा, शांति, निःस्वार्थ सेवा, सहिष्णुता, आत्मीयता, दैवी प्रेम जैसे मूल्यों से लैस कर सकता है जो प्राचीन भारत की विरासत को गौरवान्वित करेगा।

मानवता के उत्थान हेतु शिव का अवतरण 'महाशिवरात्रि'

अध्यात्म के मार्गदर्शन में शासन करने से
होता राष्ट्र का सफल निर्माण : विधायिका

फरीदाबाद-एस.जी.एम. नगर(हरियाणा)। महाशिवरात्रि के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज द्वारा आयोजित कार्यक्रम में बहन सीमा त्रिखा, विधायिका, बड़खल विधानसभा क्षेत्र, फरीदाबाद ने कहा कि वर्तमान समय में प्रत्येक मानव के लिए मन की शांति परम आवश्यक है जिसे परमात्मा से योग लगाकर सहजता से प्राप्त किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि अध्यात्म के मार्गदर्शन में शासन करने से ही समाज और राष्ट्र का सफल निर्माण होता रहा है और आगे भी होता रहेगा। उन्होंने यह भी कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्था के संपर्क में आने के पश्चात् उन्हें असीम शांति एवं शक्तियों का अनुभव हुआ है। सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. कौशल्या बहन ने महाशिवरात्रि पर्व का महत्व बताते हुए कहा कि परमात्मा शिव अज्ञान की अंधेरी रात में इस सृष्टि पर आते हैं। जब सारा संसार माया के वश हो जाता है, जब सभी आत्माएं पाँच विकारों के प्रभाव से पतित हो



जाती हैं, जब पवित्रता और शांति का सत्य धर्म हम भूल जाते हैं, ऐसे समय पर हमें जगाने, समस्त मानवता के उत्थान व सम्पूर्ण विश्व में फिर से शांति, पवित्रता और प्रेम का सत्य धर्म स्थापित करने परमात्मा एक साधारण तन में प्रवेश करते हैं। ललित कुमार ने कार्यक्रम में शामिल सभी अतिथियों का सहृदय धन्यवाद किया एवं सर्व के प्रति शुभ-भावना एवं शुभ-कामनाएं प्रकट की।

'आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के अंतर्गत

ओ.आर.सी.-गुरुग्राम। 'आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के अंतर्गत ओम शांति रिट्रीट सेंटर में वित्तीय मामलों से जुड़े सी.ए., सी.एस. एवं सी.एम.ए. प्रोफेशनल्स के लिए 'रीकनेक्ट, रीचार्ज एंड रीज्यूवनेटिंग' कार्यक्रम की राष्ट्रीय लॉन्चिंग पर ओ.आर.सी. निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी ने कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्था आध्यात्मिक मूल्यों के आधार पर पिछले 85 वर्षों से स्वर्णिम भारत बनाने की सेवा कर रही है। उन्होंने कहा कि इस अवसर पर हम सभी ये दृढ़ संकल्प करें कि अपने श्रेष्ठ आचरण और निष्ठा के बल पर स्वर्णिम भारत का निर्माण करेंगे। भारतीय

फाइनेंस प्रोफेशनल्स के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम की लॉन्चिंग

दिवाला और शोधन अक्षमता बोर्ड की सदस्या डॉ. मुकुलिता विजयवर्गीय ने कहा कि देश में दिवालिया सम्बंधित मामले लगातार बढ़ रहे हैं और इससे जहां व्यक्ति मानसिक रूप से कमजोर होता है वहीं बिजनेस भी अस्त-व्यस्त हो जाता है। इसलिए हमें मेडिटेशन से मन को मजबूत बनाना जरूरी है। साथ ही नियमों का पालन भी आवश्यक है। ऑनलाइन सम्बंधित करते हुए भारतीय चार्टर्ड अकाउंटेंट संस्थान के अध्यक्ष सी.ए. डॉ. देवाशीष मित्रा ने कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्था का ये बहुत अच्छा इनीशिएटिव है। हम सब सी.ए. मिलकर स्वर्णिम भारत के निर्माण में भरपूर सहयोग देंगे। भारतीय लागत लेखाकार

संस्थान के अध्यक्ष पी.राजू अय्यर ने कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्थान के स्ट्रेस फ्री मैनेजमेंट कार्यक्रम बहुत ही प्रभावी होते हैं। हम जैसे प्रोफेशनल्स में सकारात्मक ऊर्जा का संचार कर देते हैं। सी.एम.ए. उपाध्यक्ष



विजेन्द्र शर्मा ने कहा कि ऐसे कार्यक्रम अगर लगातार होते रहें तो भारत एक न एक दिन स्वर्णिम बन ही जाएगा। ब्रह्माकुमारीज के अतिरिक्त महासचिव ब्र.कु. बृजमोहन भाई ने कहा कि वित्त मामलों से जुड़े प्रोफेशनल्स

का काम बहुत ही चुनौतीपूर्ण होता है लेकिन यदि हम ईश्वरीय याद को अपने कार्य में शामिल कर लेते हैं तो बहुत कुछ आसान हो जाता है। मन के पवित्र विचार जीवन बहुत सरल बना देते हैं। इस अवसर पर सी.एम.ए. शैलेन्द्र पालीवाल, भारतीय प्रबंधन विशेषज्ञ प्रो. राजन सक्सेना, सी.ए. राज चावला आदि गणमान्य अतिथियों ने कार्यव्यवहार या जीवन में आने वाली अन्य परिस्थितियों को सहज पार करने में मेडिटेशन की भूमिका को अहम बताया। ब्र.कु. फाल्गुनी ने सभी को राजयोग की गहन अनुभूति कराई। कार्यक्रम का संचालन ब्र.कु. ईशु ने किया। मौके पर काफी संख्या में फाइनेंस प्रोफेशनल्स ने शिरकत की।

देखो... त्यर्थ हमें कहाँ ले जा रहा...!

हम कितने भाग्यशाली हैं जो संसार के 'असार कुचक्र' से छूट गये। हमने जन्म-जन्म इस कुचक्र से छूटने के न जाने कितने प्रयत्न किये, कितनी ही कोशिश की, किन्तु जितना ही उससे छूटने की कोशिश की उतना ही उस दलदल में और ही फँसते गये। न जाने हमने कितने पंडितों-विद्वानों के आगे चक्कर काटे होंगे, पर हमें असफलता ही हाथ लगी। इसका मतलब ये था कि जिस पर हमारी आस्था थी वे स्वयं ही इससे मुक्त नहीं थे। तो भला वे हमें कैसे मुक्त कर पाते! आज की एडवांस जनरेशन में इससे छूटने के लिए कई पॉजिटिव थिंकिंग का सहारा ले रहे हैं तो कई योगासन का। पर ये सब करते हुए भी पूर्णतः सफल नहीं हो पा रहे। हमने हाल ही में देखा कि एक मशहूर एक्टर जो रोज योगासन करता था, जिम में जाता था, शारीरिक रूप से हष्ट-पुष्ट भी था, फिर भी हार्ट अटैक में अपनी जान गंवा दी। प्रयास तो करते हैं सभी अपने-अपने लेवल पर, पर फिर भी जीवन में कुछ न कुछ त्रुटियाँ रह ही जाती हैं। परिणामस्वरूप वे चाहते हुए भी उससे निजात नहीं पा सकते।

ऐसे वक्त में हम भाग्यशाली हैं कि हमें परमात्मा के द्वारा सत्य ज्ञान प्राप्त हुआ और हम उसी राह को चुनकर आगे बढ़ रहे हैं। उस राह को हमने ही चुना क्योंकि हमें पता है कि इससे ही हमारा जीवन सफल होगा। होगा भी क्यों ना! ये बात दूसरों के लिए साधारण हो सकती है किंतु ऐसे सांसारिक कुचक्र के मध्य में हमने उसको जाना भी और पहचाना भी। अब परमात्मा का कहना है कि बच्चे अब छोड़ो सब व्यर्थ की बातें, और छोड़ो दुर्गुण देखने की आदत को, इसमें ही आपका कल्याण है। इसके लिए कल्याणकारी प्रभु ने हमें अनेक विधियाँ, युक्तियाँ अथवा उपाय बताये हैं जिनसे



ब.क. गंगाधर

आत्मा में घुसे हुए व्यर्थ व बुरे संस्कार बाहर निकल जाते हैं और उससे पीछा छूट जाता है। सब बातों का तो यहाँ उल्लेख करना संभव नहीं, परंतु एक ऐसी बात को हम यहाँ लिपिबद्ध करना चाहेंगे जो कि किसी अंश में हमारी दृष्टि-वृत्ति को विकृत होने से बचा सकती है।

वो ये है कि कई बार हम किसी व्यक्ति से किसी दूसरे की निंदा सुनकर, चुगली सुनकर, शिकायत सुनकर, अफवाहें सुनकर उसे तुरंत मान जाते हैं और यह सोचने लगते हैं, 'अच्छा, वो व्यक्ति ऐसा निकृष्ट है! हमने तो उसके विषय में कभी ऐसा सोचा ही नहीं था।' हम उस बात की जांच नहीं करते बल्कि यह देखकर कि कहने वाला व्यक्ति हमारा घनिष्ठ मित्र है, विश्वास पात्र है, हमारे निकटतम है, हम उस बात को दूसरे व्यक्ति की अनुपस्थिति में मान जाते हैं। गोया हम उसकी पीठ में छुरी घोंपते हैं। चाहे वो व्यक्ति निर्दोष ही हो, हम दूसरे के कहने में आकर मन ही मन उससे घृणा करने लगते हैं। जिसे हम अच्छा समझते थे, उसे अब घटिया मानने लगते हैं और कई बार तो दूसरों को कहने लगते हैं कि 'अरे, तुम्हें मालूम है कि उस व्यक्ति को फलाने से लगाव-झुकाव है! वो झूठा है, ठग है, बेईमान है, वो केवल बाहर का दिखावा करता है। और वो बोलने में बड़ा चालाक है। बाकी उसमें ज्ञान-ध्यान कुछ नहीं है। तुम आगे से उससे बोलना छोड़ दो, उसका संग खराब है। मनुष्य कमर के साथ भारी पत्थर बांध कर पानी में उतरेगा तो डूबेगा ही। उसके संग वाले का भी ऐसा ही परिणाम होगा। सुना, तुम बचकर रहना।' ऐसी मानसिकता वालों का हाल भला क्या होगा!

जब हमारी ऐसी दृष्टि-वृत्ति हो जाये तो मनुष्य की अपनी बुद्धि मारी जाती है क्योंकि वह स्वयं अपनी बुद्धि में कंकड़-पत्थर इकट्ठे करने लगता है। गोया अपने ही डूबने की तैयारी करने लगता है। अपने को ज़िंदा जलाने के लिए अपनी चिता की लकड़ियाँ स्वयं चुनकर लाता है और उसकी सेज बनाता है। अपनी हत्या के लिए अग्नि स्वयं अपने हाथों से जगाता है। उसे किसी करनीघोर ब्राह्मण की आवश्यकता ही नहीं। शमशान पर जलाने की रस्म करने वाले जो पंडित होते हैं, उसकी भी उसे आवश्यकता नहीं। वो बिना मंत्र और रस्म के मर जाता है। किसी को उसका जनाज़ा उठाने की भी ज़रूरत नहीं। क्योंकि वह तो अपने आप ही चिता पर लेट जाता है। हाय! हाय! हम अपने जीवन से यह क्या करते हैं! जैसे कोई चंदन को जलाकर कोयला बना ले, वैसे ही हम अपने जीवन को भस्म कर लेते हैं। अब छोड़ो दुश्मनी को, उसके लिए छोड़ो नफरत को, नफरत को छोड़ने के लिए छोड़ो दूसरों की व्यर्थ बातों को सुनने और दूसरों के दुर्गुण देखने की आदत को। अगर यह एक बात भी हम पक्की कर लें तो भी हम उस रास्ते पर चल पड़ेंगे और खुशी, आनंद तथा मित्र भाव के झूले में झूलते रहेंगे। दृष्टि-वृत्ति को न बदला तो कृति नहीं बदलेगी। अगर कृति न बदली तो विकर्मों का बोझ बढ़ता जायेगा और पाप का घड़ा भरता जायेगा तथा जीवन दलदल में धंसता जायेगा। स्मृति-भ्रंस हो जायेगी और जिसकी स्मृति-भ्रंस हो जाये तो गीता के महावाक्य हैं कि उसकी केवल लुटिया ही नहीं डूबती, उसका तो सर्वनाश हो जाता है। तो हे मानव! अपने जीवन को एक बार बैठकर देखो, कहीं हमारा जीवन भी ऐसी आदतों के वश तो नहीं! हम अपने पैर पर खुद ही तो कुल्हाड़ा नहीं मार रहे! सोचो, चिंतन करो और ऐसी आदतों की चिता को तिलांजलि दे दो।

कौन कर रहा... हमारी परवरिश

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

बाबा ने हम सबको कितनी खुशी दी है, सदा इसी खुशी में झूमते रहो। खुशी की अनुभूति में खो जाओ। इस दुनिया में सबसे खुशनुसीब हम ही हैं। बाबा ने इतनी खुशी की खुराक दी है जो खाते रहो और खिलाते रहो। खुशी गंवाओं नहीं, बातें तो होगी लेकिन बातें खुशी न ले जाएं, खुशी हमारी चीज है। सदा नशा रहे कि हम भगवान के बच्चे हैं, साधारण नहीं। अगर कोई पूछे आपका बाप कौन है? तो खुशी से वर्णन करेंगे। सदा इसी खुशी में उड़ते रहो। चेक करो शुरु से लेकर बाबा ने हमें कितने खजाने दिए हैं। यही सिमरण करते रहो। कितना भी बिजी रहो लेकिन हमारी खुशी हमारे साथ रहे। भगवान हमारा बाप होगा, यह कभी स्वप्न में भी नहीं सोचा था। हमारा ड्रामा में भाग्य था जो बाबा के पास पहुंच गये। बाबा के घर में रहते हैं, खाते हैं यह कभी भूल नहीं सकता। अपनी चेकिंग करो कि दिन तो बीता लेकिन किसके साथ रहते हैं? कौन हमारी परवरिश कर रहा है? बहनें या बाबा। भगवान के लिए क्या सोचते और सुनते थे लेकिन वह हमारा हो गया, ये नशा रहे। भगवान हमारा बाप है जो प्रैक्टिकल में हमारी पालना कर रहा है। बाबा हमारा साथी है। बाबा कहने से कितनी खुशी होती है। ऋषि-मुनि भी चाहते हैं भगवान

हमें दिखाई दे, महसूस हो लेकिन वह हमारा बन गया। जितना बाबा में मेरापन लायेंगे उतना खुशी और शक्ति मिलती रहेगी। बस बाबा में खो जाओ। बाबा के सिवाए हमारा है ही कौन। बाबा ने गैरन्टी दी है हमारी आज्ञा पर चलेंगे तो क्या से क्या बना देंगे! संगम पर साधारण पार्ट है लेकिन खुशी कितनी है और चाहिए ही क्या। वह हमारे लिए क्या-क्या कर रहा है। सैलवेशन भी बाबा देता है, यज्ञ भी उसने रचा है।

हमसे कोई पूछे आपको कौन चला रहा है? भले बहनें निमित्त हैं लेकिन बाबा चला रहा है। इसी खुशी और खुमारी में हमारे रात-दिन बीतते हैं। कभी ऐसा समझा था कि हम भगवान के साथ रहेंगे, खायेंगे! यह भाग्य कम थोड़े ही है। जो अपने भाग्य का लाभ उठाते चलते रहते हैं उनकी निशानी सदा खुशनुसीब की होगी। सारी दुनिया पड़ी है लेकिन भगवान ने मुझे निमंत्रण देकर बुलाया है। भगवान ने मुझे स्वीकार किया है। बाकी आपस में जो थोड़ी बहुत खिंटपिट होती है, यह भी पेपर समझ पास होना है। हमारे जैसा खुश कोई और हो ही नहीं सकता। हमारे पर बाबा की नज़र पड़ गई। कोई भी बात हो लेकिन शक्ल न बदले क्या करूँ, कैसे करूँ! बाबा मेरे साथ है बस यह स्मृति में रखो।

हमारे मन में चार गुण सदा होने चाहिए

राजयोगिनी दादी जानकी जी

धीरज, मन को धीरज दो। जल्दी अधैर्य न हो जाओ, अधैर्यता व्यर्थ चिंतन में ले जाती है, दुःखी बनाती है।

सहनशीलता, इसकी गहराई में जायेंगे तो सहन करने की शक्ति आती है। मुझे सहन करना पड़ता है, माना दुःख हुआ। शक्ल में थोड़ा भारीपन आयेगा, कभी आँखें गीली भी हो जायेंगी तो वो सहनशीलता नहीं है।

सबके साथ हमारा मित्रता भाव हो। मेरा कोई शत्रु नहीं है। निंदा हमारी जो करे मित्र हमारा सोया। जो महिमा करे उसको मित्र मानो, जिसने कुछ निंदा की, गलत बोला, उसको शत्रु मानो, यह लक्षण ज्ञानी तू आत्मा के नहीं है। महिमा करने वाले तो मुझे खुश भी कर सकते हैं, आज महिमा करेंगे कल कुछ भी कर सकते हैं, इसलिए वो मेरे जीवन का आधार न हो। महिमा के आधार से मैं सेवा में रहूँ, उनसे मेरा अच्छा सम्बन्ध रहे... नहीं। रूहानियत है, ईश्वरीय स्नेह है, तो वह बात पूरी हो जायेगी। सहनशीलता सुखी रखेगी इसलिए हमारा हरेक के

साथ मित्रता भाव कभी न छूटे, कुछ भी हो, मित्रता भाव में सब कुछ समा लेते हैं। बाबा ने जैसे हरेक को अपना मित्र माना। बात आती हैं चली जाती हैं, बातों के कारण हमारे आपसी सम्बन्ध ठीक न रहें, यह मेरे लिए शान नहीं। गम्भीरता का गुण, यह गुण हमें ज्ञानी तू आत्मा बना देता है। जैसे बाबा मुस्कराता कैसे है, बाबा की मुस्कराहट में साधारणता तो नहीं है ना! शब्द थोड़े, रूप बड़ा स्नेह और शक्ति वाला हो, साधारण न हो। दूसरा रूहानियत में रमणीकता हो। कोई सीन ऐसी आ जाये तो सीरियस न बन जायें। सीन देखके सीरियस हो जायेंगे तो हमारे मन का इफेक्ट तन पर भी आयेगा, वायुमण्डल में भी आयेगा। वायुमण्डल को सदा शांत, सच्चाई, प्रेम वाला रखना, उसमें दुःख की लेन-देन का बिजनेस बंद हो जाये। अगर थकावट वाला या सीरियस रूप है तो दुःख की लेन-देन का वायुमण्डल हो जाता है। हमें वो नहीं करना है।

स्व स्थिति को महान बनाने का साधन... ज्ञान और योग



राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

एक बाप पर पूरा फेथ हो, आप उनसे फेथफुल अर्थात् ईमानदार रहो। जो ईमानदार है नैचुरल उनका रिगार्ड होगा। डिस्रिगार्ड तभी होता जब फेथफुल नहीं। जो बाबा ने मुझे आज्ञाएं दी हैं उनको फुल पालन करना है। ऐसे नहीं दस में आठ पालन करूँ, दो नहीं। बाबा की आज्ञाओं को सेन्ट परसेन्ट दिल में नोट करो फिर कोई भी सवाल नहीं रहेगा। सदा ओके बन जायेंगे। अगर मेरी स्थिति महान नहीं तो मैंने बाबा का बनकर क्या पाया!

स्व स्थिति को महान बनाने का साधन है ज्ञान और योग। वह एक्स्प्रेट रखो तो दैवीगुण ऑटोमेटिक आ जायेंगे। सेवा की सबजेक्ट भी कवर हो जायेगी क्योंकि मैंने ज्ञान से ही समझा ना कि हम सो देवता है, देवतापन का ज्ञान मिला तो दैवीगुण ऑटोमेटिक आ गये। ज्ञान से ही सेवा का उमंग बढ़ा।

दुनिया में ऐसा कोई नहीं जो कहे तुम्हें



स्व स्थिति को महान बनाने का साधन है ज्ञान और योग। वह एक्स्प्रेट रखो तो दैवीगुण ऑटोमेटिक आ जायेंगे। सेवा की सबजेक्ट भी कवर हो जायेगी क्योंकि मैंने ज्ञान से ही समझा ना कि हम सो देवता है, देवतापन का ज्ञान मिला तो दैवीगुण ऑटोमेटिक आ गये। ज्ञान से ही सेवा का उमंग बढ़ा।

आजीवन ब्रह्मचर्य पालन करना है। परन्तु बाबा ब्रह्मचर्य में रहने की सख्त श्रीमत देता, इसमें जरा भी छूट नहीं। जिस बात के लिए दुनिया एक तरफ, उसी बाप को बाबा बिल्कुल स्ट्रॉन्ग करता। इस बात में रिचक भी रहमदिल नहीं, इसमें काल होकर रहो। संस्कारों पर धर्मराज होकर रहो। जितना अपने संस्कारों पर धर्मराज बनेंगे उतना धर्म के ऊपर राज्य करेंगे। संस्कारों में जरा भी निर्बलता आयेगी तो हीन हो जायेंगे। लौकिक-अलौकिक कार्य में मस्त रहो। मस्तराम बन जाओ तो रावण आपेही पीठ कर लेगा। अगर सोचेंगे क्या करूँ, संस्कार हैं, तो वह कमजोर बना देंगे। सोचना भी कमजोरी है। आप डोन्टकेयर हो जाओ।

आयेंगे चले जायेंगे, हमें बलवान से बलवान बाबा मिला। उसने हमें सब बल दे दिये इसलिए निर्बलता की बातें सोचो ही नहीं। आप समझो हम धर्मराज के समान हैं। हम माया को मार भगाने वाले हैं।

हमें एक ही डर है सतगुरु की श्रीमत के खिलाफ कोई मनमत न हो। जहाँ मनमत आई वहाँ अवज्ञा हुई, श्रीमत को पालन करने के लिए सतगुरु को सदा सामने रखो। श्रीमत मिली है बच्चे अमृतवेले उठना है, अन्न की परहेज रखनी है, संगदोष में नहीं आना है। रोज पढ़ाई पढ़नी है, यह सब सतगुरु ने श्रीमत दी। एक कहावत है जिनके सिर पर तू स्वामी, सो दुःख कैसा पावे। तो मुझे न कोई चिंता है, न दुःख।

दृष्टि, वृत्ति और व्यवहार

मनुष्य के व्यवहार का उसकी दृष्टि और वृत्ति से गहरा सम्बन्ध है। मनुष्य की जैसी दृष्टि हो वैसी उसकी वृत्ति बनती है और जैसी वृत्ति हो उसी के अनुसार ही उसका व्यवहार होता है। 'महात्मा' वही होता है जिसकी दृष्टि और वृत्ति महान् हो। जिसकी दृष्टि अवगुणों या दुर्गुणों पर जाती है, उसकी प्रायः घृणा की वृत्ति हो जाती है। इससे स्वयं उसकी अपनी वृत्ति परिवर्तन होने से वो दुःखी एवं अशान्त रहता है। वह दूसरों की कटु आलोचना करता है और लोगों में उसकी भरपूर निन्दा करता है। उसके गुण उसे देखने में नहीं आते और यदि आये तो भी उसे वो अवगुण की पुट दे देता है। इस प्रकार, अनेकों के प्रति दृष्टि विकृत होने से उसका अपना व्यवहार और अपना जीवन विकृत हो जाता है। जैसे दृष्टि का प्रभाव वृत्ति पर पड़ता है, वैसे ही वृत्ति भी दृष्टि को प्रभावित करती है। अगर मनुष्य की वृत्ति सतोगुणी है तो उसकी दृष्टि भी तदानुसार सतोगुणी होती है और उसका व्यवहार भी क्षमाशील, गुणग्राही, निर्दोष और कल्याण की भावना से ओत-प्रोत होता है।

वृत्तियों का निरोध करके जड़-जैसी अवस्था में चले जाना कोई श्रेष्ठ

पुरुषार्थ नहीं

दृष्टि और वृत्ति के बारे में ऊपर हमने एक-दूसरे को प्रभावित करने वाली क्रिया और प्रतिक्रिया का जो संकेत किया है और उसके परिणामस्वरूप मनुष्य के व्यवहार, जीवन और कर्मों पर तथा मानसिक शान्ति एवं आन्तरिक सुख के साथ उसका जो सम्बन्ध स्पष्ट किया है, वो शाश्वत सत्य है। वह संसार के सभी व्यक्तियों पर सदा लागू होता है। इसलिए इसके बारे में सावधान रहने की आवश्यकता है। इस पर ध्यान न देने के परिणामस्वरूप दिनोदिन मनुष्य का जीवन गिरावट की ओर जाता है। इस सत्यता पर धार्मिक ग्रंथों में इतना बल दिया गया है कि कुछ मनीषियों ने तो योग की व्याख्या करते हुए यह कह दिया है कि "योग चित्त की वृत्तियों के निरोध का नाम है"। यद्यपि सब वृत्तियों का निरोध करके जड़-जैसी अवस्था में चले जाना कोई श्रेष्ठ पुरुषार्थ

नहीं है, न ही इसकी कोई आवश्यकता है। परन्तु लगता है कि ऐसी विचारधारा वाले सन्तों ने यह सोचा होगा कि हर एक वृत्ति में कुछ न कुछ दोष होता ही है। उन्होंने अपने जीवन में अनुभव किया होगा कि जाग्रत अथवा सुषुप्त अवस्था में ऐसा कोई काल होता ही नहीं जब मनुष्य की वृत्ति पूर्णतः निर्दोष हो, पवित्र हो एवं किसी न किसी विकार के सूक्ष्मातिसूक्ष्म प्रभाव से रहित हो। प्रायः ही नहीं बल्कि लगभग सभी की मनोदशा बहुधा ऐसी रहती होगी। इसमें कुछ कम ज़्यादा सत्यता तो है।



ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

परन्तु यदि मनुष्य देह-दृष्टि से ऊँचा उठ जाये और सबको आत्मा के रूप में देखे और सब आत्माओं को परमात्मा की सन्तान के रूप में स्वीकार करे और "हरेक अपने कर्मों का फल भोगेगा, हम काहे को चिन्तन करें" - इन बातों की सूझ-बूझ रखे तो फिर वो विदेह स्थिति में रहेगा। यद्यपि उसके पाँव पृथ्वी पर होंगे परन्तु उसका मन परमधाम में होगा। वो 'पुरुष' से 'विराट पुरुष' हो जायेगा। उसकी स्थिति 'सहजयोगी' जैसी होगी। उसका मन भ्रमित, विचलित, उत्तेजित या मूढ़ अवस्था में नहीं जायेगा। वे सदा 'आनन्दकन्द' मनोस्थिति का रसास्वादन करता रहेगा। उसके मन में सबके प्रति सदा सद्भावना बनी रहेगी। सबके साथ उसकी निरन्तर आत्मीयता होगी। भगवान उसका साथी होगा। जब वो स्वयं साक्षी होगा, दृष्टा होगा और उसका चित्त ज्ञान से छलकता होगा तो वह सदा हर्षित

होगा।

बदलना आवश्यक है

कोई पुरुषार्थी सोच सकता है कि ये जो ऊँची-ऊँची बातें हैं, ये उनकी पहुँच से बाहर हैं और अभी तो वे उससे काफ़ी दूर हैं। कोई तो ये भी कहेंगे कि ये आदर्श हैं, ये व्यवहारिक नहीं हैं। वे यह जानना चाहेंगे कि वे ऐसी गगनचुम्बी अवस्था में अथवा स्थिति के शिखर पर कैसे पहुँचें, उनका मन जो बार-बार मैला हो जाता है, उस धूल-मिट्टी अथवा कचड़े-कीचड़ से कैसे बचे रहें? वे कहेंगे कि उनकी दृष्टि पर तो दूसरों के अवगुणों का चश्मा चढ़ा ही रहता है या उनके दुर्गुण उनकी आँख में धूल के कंकड़ की तरह चुभते ही रहते हैं। आखिर उनकी आँखें तो खुली रहनी हैं, तब उनकी दृष्टि कैसे निर्मल बनी रहे? उनकी वृत्ति अपने तथा दूसरों के दोषों से सदा विराम अवस्था में कैसे रहे? ये प्रश्न हरेक के लिए उपयोगी हैं। इनके पीछे दृष्टि और वृत्ति को बदलने की चेष्टा है। यह चेष्टा संकेत देती है कि उनकी पुरुषार्थ करने की नीयत तो है। ऐसे लोग उन लाखों-करोड़ों से अच्छे हैं जो अपनी दृष्टि-वृत्ति को बदलने की कामना ही नहीं करते। अपनी हालत खराब कर बैठने के बावजूद भी वे इस खराबी के स्वभाविक होने की बात करते हैं और तर्क-वितर्क से उसे युक्ति-संगत बताते हैं। ऐसे लोगों का बदलना तब तक असम्भव है जब तक उन्हें यह एहसास ही नहीं होता कि हमें स्वयं को बदलना चाहिए। आज बदलें या कल, बदलने के बिना कोई दूसरा रास्ता ही नहीं है। मन की गहराई से यदि हम बदलना स्वीकार नहीं करेंगे तो परिस्थितियाँ हमें बदलने पर मजबूर कर देंगी। तब भी यदि हम न बदले तो फिर हम स्वयं को मनुष्य की कोटि में न समझें।

कुत्ता एक ऐसा पशु है जिसकी पूँछ सदा टेढ़ी बनी रहती है। कहते हैं कि एक मनुष्य ने वर्षभर कुत्ते की पूँछ को लोहे की नली में सीधा कसकर रखा। उसने सोचा, एक वर्ष काफ़ी होता है, अब तो यह पूँछ सीधी हो गयी होगी। इस दौरान कुत्ता चिल्लाता भी था तो भी उसने उसकी पूँछ पर से नली नहीं हटायी। पर वर्षभर बाद जब हटायी, तब वो यह देखकर आश्चर्य चकित हुआ कि कुत्ते की पूँछ तो वैसी की वैसी टेढ़ी है! ऐसे ही कुछ लोग बदलना ही नहीं चाहते। उनके बारे में तो कहेंगे कि 'अल्लाह ही खैर करे!' 'खुदा हाफिज, उन्हें ख़ौफ़े खुदा ही नहीं है।' जो धर्मराज से ही नहीं डरते, वे धर्मात्मा लोगों से कहाँ डरेंगे...!!!



शांतिवन। ब्रह्माकुमारीज की पूर्व मुख्य प्रशासिका दादी हृदयमोहिनी के प्रथम पुण्य स्मृति दिवस के कार्यक्रम में शामिल होने पर भारतीय नौसेना के उप प्रमुख वाइस एडमिरल एस.एन. घोरमडे, परम विशिष्ट सेवा मेडल, अति विशिष्ट सेवा मेडल, नौ सेना मेडल ने संस्थान की वर्तमान मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी को भारतीय नौसेना का मोमेंटो देकर सम्मानित किया। इसके पश्चात् दादी ने उन्हें ईश्वरीय सौगात व प्रसाद भेंट किया। इस मौके पर कर्नल ब्र.कु. सती तथा ब्र.कु. डॉ. दीपक हरके उपस्थित रहे।



नई-दिल्ली-मोहम्मदपुर। महाशिवरात्रि के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलन के पश्चात् उपस्थित हैं बायें से ब्र.कु. कंचन बहन, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका, मुकेश सुयान, मेयर, साउथ दिल्ली म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन, राजयोगिनी ब्र.कु. शुक्ला दीदी, निदेशिका, ओआरसी एवं हरिनगर सबजोन, डॉ. एंथनी राजू, प्रेसीडेंट, ऑल इंडिया कार्डसिल ऑफ ह्यूमन राइट्स, लीबर्टीज एंड सोशल जस्टिस, ब्र.कु. फलक बहन, ब्र.कु. कपूर तथा ब्र.कु. सतबीर।



नई दिल्ली-पालम। शिव जयंती के अवसर पर शिव ध्वजारोहण कर सभी को श्रेष्ठ प्रतिज्ञा कराते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सरोज बहन। इस अवसर पर ब्र.कु. अमर सिंह भाई, दक्षिणी दिल्ली नगर निगम स्थाई समिति अध्यक्ष भूपेन्द्र गुप्ता, दक्षिणी दिल्ली नगर निगम के पूर्व उपमहापौर कुलदीप सोलंकी, दिल्ली थाने के अतिरिक्त थाना अध्यक्ष योगेश जी, इंस्पेक्टर प्रिया वर्मा तथा अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।



भादरा-राज। महाशिवरात्रि के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में संबोधित करते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. चंद्रकांता बहन। इस अवसर पर एचडीएफसी शाखा भादरा के मैनेजर सागरमल शर्मा, डिप्टी मैनेजर अतुल जैन, नगर पालिका भादरा के पार्श्व तेजपाल महिपाल आदि गणमान्य लोगों सहित अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।



हाथरस-आनंदपुरी कॉलोनी(उ.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज द्वारा महाशिवरात्रि के अवसर पर 'शिव अवतरण संदेश यात्रा' का आयोजन किया गया। इसके अंतर्गत रोशनविहार कॉलोनी में प्रबंधक प्रदीप शर्मा द्वारा यात्रा का स्वागत किया गया। इस अवसर पर ब्र.कु. शान्ता बहन तथा अन्य प्रतिष्ठित लोगों सहित बड़ी संख्या में ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।



चरखी दादरी-हरियाणा। अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम में उपायुक्त प्रदीप गोदारा तथा विधायक सोमवीर सांगवान स्थानीय ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र की संचालिका ब्र.कु. प्रेमलता बहन को सम्मानित करते हुए।



ढिगावा मंडी-हरियाणा। महाशिवरात्रि कार्यक्रम में पूर्व खण्ड शिक्षा अधिकारी कर्ण सिंह गोठड़ा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. शकुन्तला बहन व ब्र.कु. पूनम बहन। साथ हैं दैनिक जागरण के पत्रकार मदन श्योराण तथा ढिगावा मंडी के पूर्व सरपंच नरेश सिंगला।



गाया-सिविल लाइंस(बिहार)। महाशिवरात्रि के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए डॉ. एस.प्रसाद, प्रमुख व्यवसायी समीर कुमार, रश्मि कुमारी तथा राजयोगिनी ब्र.कु. शीला दीदी।



सैदपुर-गाजीपुर(उ.प्र.)। 'आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर अभियान' के अंतर्गत शिवरात्रि के अवसर पर 'शिव संदेश विश्व नवनिर्माण शोभायात्रा' का आयोजन किया गया। कोतवाल तेज प्रताप सिंह, ब्रह्माकुमारीज की जिला संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. निर्मला दीदी ने शोभायात्रा को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस मौके पर स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सुषमा बहन तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।

प्युरिटी का फाउंडेशन हो मजबूत

गतांक से आगे...

जैसा कि पिछले दो अंकों में हम प्युरिटी के बारे में ही बात कर रहे हैं। तो अब हम और आगे बढ़ते हैं कि बाबा ने हमें जो कहा कि प्युरिटी माना सिर्फ ब्रह्मचर्य नहीं, सिर्फ उसको ही प्युरिटी नहीं कहा जाता। लेकिन प्युरिटी माना ब्रह्माचारी बनना। ब्रह्मा बाबा ने जो आचरण करके सिखाया, उस बात को आचरण में लाना ये है ब्रह्माचारी, ये है प्युरिटी। तो बाबा कई बार मुरली में अपना अनुभव सुनाते हैं कि भक्ति मार्ग में बाबा में कितनी रॉयल्टी थी, कितनी सच्चाई थी कि कई बार राजाओं, महाराजाओं के पास भी जाते थे तो उनकी सत्यता की सभ्यता को देखते हुए वो राजाये भी कह देते बाबा को कि भगवान से गलती हो गई राजा तो आपको बनाना चाहिए था, हमको बना दिया। कितनी बड़ी बात है। कोई स्टेट का राजा ये बात बोले बाबा को तो ये सोचने की बात है। उनके अन्दर इतनी सत्यता थी कि कभी कोई बात को लेकर झूठ नहीं अपनाया। जो बात जैसे है वैसे ही बता देते थे। जो भी उनके पास आता व्यापार के रिलेटेड तो बता देते थे कि मैं गीता का पाठ किए बिना कोई कार्य आरम्भ नहीं करता। बाबा गीता का पाठ करके ही सब कार्य करते थे। चाहे वो बैठ रहे। वो कहते थे कि हम तो आपको इतना दान देने के लिए तैयार हैं आप अपना पूजा-पाठ छोड़ दो, गीता का पाठ छोड़ दो और बिजनेस पर आ जाओ। तो बाबा कहते थे

कि आप तो हमें कागज देते हैं और हम तो आपको हीरे देते हैं, दाम आप हमें दे रहे हैं या हम आपको दे रहे हैं। और उसके लिए मैं अपनी जीवन की नियम-मर्यादायें नहीं छोड़ूंगा।

तो इसीलिए कहा कि प्युरिटी एक तो विचारों की क्योंकि विचार ही चेहरा बनाता है। तो विचार किस प्रकार है वो चेहरा बताता है। तो चेहरा कैसा होना चाहिए? सदा खुशी



डॉ. उषा, वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

वाला, सदा खुशकिस्मत दिखाई दे कि ये खुशकिस्मत है। ऐसा खुशी वाला चेहरा सदा हो, जिस चेहरे के अन्दर ऐसी रूहानियत समाई हो। क्योंकि चेहरे में ही तो सारी बातें आ जाती हैं, दृष्टि भी आ जाती है, वृत्ति भी आ जाती है। तो उसके लिए बाबा ने कहा कि दृष्टि के अन्दर रूहानियत हो, रूहों को देखो, उस सत्य स्वरूप को देखो, हर आत्मा का सत्य स्वरूप दिखाई दे। ऐसी हमारी दृष्टि हो कि ये हमारा आत्मा भाई-भाई है। ऐसी वृत्ति हमारी बन जाये और इस तरह जब

आपस में एक-दूसरे के साथ बात करते हैं तो उसमें भी रूहानियत छलके, अर्थात् बातचीत के अन्दर रूहानियत का भाव, मधुरता, गंभीरता, ये भी प्युरिटी का ही हिस्सा है। दादी जानकी हमेशा ये बात कहती थीं कि प्युरिटी का प्रमाण मधुरता, धैर्यता, गंभीरता और सरलता है। इन चार बातों से वाणी का पता चलता है। अगर वाणी के अन्दर सरलता न हो, सहजता न हो, मधुरता न हो, धैर्यता न हो, गंभीरता न हो तो जो मम्मा के प्रैक्टिकल जीवन से, सभी दादियों के जीवन से सुना मम्मा के एक-एक जो वचन निकलते थे वो कितने ज्ञानयुक्त निकलते थे। वो वाणी मम्मा की कैसी होती थी धैर्यता और गंभीरता वाली। इसीलिए उनके एक-एक बोल में वजन होता था जिसको कहा जाये तोलो और बोलो। तो मम्मा का एक-एक वचन सुनने के लिए हर कोई कैसे तत्पर रहता था।

बाबा ने हमें कितना सरल बता दिया कि बच्चे तुम्हारी वाणी के अन्दर मधुरता, नम्रता छलकती होगी तो लोग आतुरता से सुनेंगे आपके शब्दों को। व्यर्थ जितना बोलते हैं, आज किसी की ग्लानि कर रहे हैं, निंदा कर रहे हैं तो क्या कहेंगे कि फालतू बातें कर रहे हैं, टाइम वेस्ट किया हमारा। दूसरी बार क्या करेंगे उस व्यक्ति से किनारा कर लेंगे। इसीलिए बाबा ने हमें इतनी सुन्दर विधि बताई कि हमारी दृष्टि, वाणी और वृत्ति ये तीन चीजें कैसी होनी चाहिए। वो प्युरिटी की पर्सनैलिटी है हमारी।

- क्रमशः



हसनपुर-हरियाणा। महाशिवरात्रि के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में केक काटते हुए जगदीश नायर, विधायक एवं भूमि सुधार व विकास निगम के चेयरमैन, हरियाणा सरकार तथा अन्य गणमान्य अतिथियों सहित ब्र.कु. बहनें एवं भाई।



मथुरा-रिफाइनरी नगर(उ.प्र.)। रिफाइनरी नगर फ्लावर शो में ब्रह्माकुमारीज द्वारा आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत पर्यावरण जागरूकता प्रदर्शनी लगाई गई। इस मौके पर स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. कृष्णा बहन, मथुरा रिफाइनरी के कार्यकारी निदेशक आशीष कुमार माइती, वृंदा क्लब की अध्यक्ष श्रीमति माइती, सीजीएम देबजीत गोगई, पी.टी. सोलंकी, अजय कैला, पी.के. सिन्हा, ऑफिसर एसोसिएशन के सीईसी रविंद्र यादव, कर्मचारी संघ के पदाधिकारी, मथुरा रिफाइनरी प्रबंधन के वरिष्ठ अधिकारी एवं ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।



कालावाली मण्डी-हरियाणा। 86वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती महोत्सव पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. संतोष, बी.के. रिशु, एस.डी.एम. उदय सिंह, विधायक बलकौर सिंह, प्रधान जी तथा अन्य।



नई दिल्ली-वसंत विहार। 'आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के अंतर्गत अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित 'महिलाएं-नये भारत की ध्वजवाहक' विषयक कार्यक्रम में उपस्थित हैं इम्पेक्टर बिमला देवी, ट्रेनिंग इंचार्ज, हयुमन एंड ट्रेकिंग इंचार्ज, आई.जी.आई. इंटरनेशनल एयरपोर्ट, अवॉर्डेड बाई सिकस्थ इंडियन ग्लोबल अवॉर्ड, इम्पेक्टर इंचार्ज, डीसीपी ऑफिस, मेहरम नगर, ब्र.कु. क्षीरा दीदी, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका तथा अन्य भाई-बहनें।



मुंगेर-बिहार। 86वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती पर आयोजित कार्यक्रम में बीडीओ संजय कुमार को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए तारापुर सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. स्नेहा बहन। मौके पर भागलपुर सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. अनीता बहन, मुंगेर सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. जयमाला बहन तथा अन्य अतिथि उपस्थित रहे।



पोरवोरिम-गोवा। 'आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के अंतर्गत आयोजित 'स्नेह मिलन' कार्यक्रम के दौरान उपस्थित हैं बायें से डॉ. अमित पाटिल, ब्र.कु. वनीता बहन, ब्र.कु. सरिता बहन, पुणे, ब्र.कु. शोभा बहन, ग्राम पंचायत सदस्य गुरुदास वेरनेकर तथा रिडि फाउण्डेशन के चेयरमैन राजेश वोल्वोइकर।



सादाबाद-उ.प्र.। महाशिवरात्रि के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज द्वारा सुंदर झाँकियों से सजी शोभायात्रा निकाली गई। तत्पश्चात् आयोजित कार्यक्रम में हाथरस जिला प्रभारी ब्र.कु. सीता दीदी, लोकदल नेता गुड्डू चौधरी, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका स्थानीय संचालिका ब्र.कु. भावना बहन, धौलपुर से ब्र.कु. सत्यप्रकाश, दाऊजी से ब्र.कु. सीमा बहन, अग्रवाल सभा अध्यक्ष पीयूष अग्रवाल, अखिलेश मिश्रा, विवेक गौतम, बिपिन गौतम तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।



कैथल-हरियाणा। शिव जयंती कार्यक्रम में कैडल लाइटिंग के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति में ब्र.कु. लक्ष्मी बहन, सोनीपत ट्रिटी सेंटर, ब्र.कु. पुष्पा बहन, कैथल, सुनील कुमार, डीएसपी व उनकी धर्मपत्नी, ब्र.कु. गुरुभजन, ब्र.कु. वीरकरण तथा अन्य।

ओम शान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें....

कार्यालय - ओम शान्ति मीडिया

संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज, शान्तिवन, तलहटी,
पोस्ट बॉक्स नं - 5, आबू रोड (राज.) 307510
सम्पर्क - M- 9414006096, 9414182088,
Email-omshantimedia@bktivv.org

सदस्यता शुल्क : भारत - वार्षिक 200 रुपये, तीन वर्ष 600 रुपये, कृपया सदस्यता शुल्क 'ओम शान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेमेंट एट शान्तिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।

Website: www.omshantimedia.org

For Online Transfer

BANK NAME:- STATE BANK OF INDIA(SBI)
ACCOUNT NO:- 30826907041
ACCOUNT NAME:- OM SHANTI MEDIA
IFSC - CODE - SBIN0010638
BRANCH:- Prajapita Brahmakumaris Ishwariya
Vishwa Vidhyalya, Shantivan
Note:- After Transfer send detail on
E-Mail - omshantimedia.acct@bktivv.org OR
Whatsapp, Telegram No:- 9414172087

ALL-IN-ONE QR

paytm
Accepted Here

Wallet KYC NOT Required

Scan & Pay using Paytm App

Wallet or Bank A/c Any Debit or Credit Card Paytm Postpaid



BHIM UPI



वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका राजयोगिनी गीता दीदी, माउण्ट आबू

कितने न भाग्यशाली हम... जो परमात्म श्रेष्ठ मत हमें मिल रही...!

संगमयुग में स्वयं शिवबाबा (परमात्मा) सृष्टि पर आते हैं और आकर जो मत देते हैं उसे ही श्रीमत कहा जाता है। ब्रह्मा तन में प्रवेश कर ब्रह्मा मुख से बाबा (परमात्मा) श्रीमत देते हैं और वो श्रीमत मुरली के रूप में हमारे सामने है। बाबा ने जो श्रेष्ठ मत, सत्य मत हम बच्चों को दी है उसी का यादगार भक्ति में श्रीमद्भगवत गीता शास्त्र बनता है। इस शास्त्र रचना में समय प्रति समय मनुष्य मत मिश्रण होती गई इसलिए आज संसार के सामने भगवान की श्रेष्ठ मत, भगवान का सत्य गीता ज्ञान दुनिया वालों के सामने नहीं है लेकिन सत्य या ओरिजनल गीता शास्त्र भी नहीं है। हम भाई-बहनें भाग्यशाली हैं कि साक्षात् भगवान जो श्रेष्ठ मत देते हैं वो बिल्कुल स्पष्ट रूप में हमें प्राप्त हो रही है। ये तो आप जानते हैं कि हरेक इंसान अपना जीवन कोई न कोई मत के आधार पर चलाता है। वो मत उनकी अपने मन की भी हो सकती है, अन्य से मिली हुई भी हो सकती है जिसको बाबा कहते हैं कि इंसान मनमत पर जीता है या परमत दूसरों के कहने अनुसार जीता है। जो लोग भक्ति करते हैं भारतवासी ही नहीं बल्कि हर कोई धर्म भक्ति करते हैं तो वो भी हरेक शास्त्र मत पर या अपने-अपने गुरु की मत पर चलते हैं। 63 जन्मों का अनुभव क्योंकि द्वार युग से मनमत भी शुरू भी होती है, परमत, मनुष्य मत भी शुरू भी होती है और गुरुमत, शास्त्रमत भी शुरू होती है।

अनेक मत होने के कारण जीवन का कोई स्वरूप नहीं रहा। मनुष्य मूँझते हैं आखिर किसकी मत पर चले, किसका कहना मानें इसलिए हम जो मानते हैं वो ही ठीक है करके, उसी मनमत या गुरु मत, या शास्त्र मत पर चलते रहते हैं।

लेकिन अब जबकि बाबा ने आकर भक्ति का फल सत्य ज्ञान हम बच्चों को दिया है, हमें स्पष्ट है कि मनमत हो या परमत हो, मनुष्य मत हो, शास्त्र मत हो या गुरु मत हो वो सम्पूर्ण सत्य नहीं है। क्योंकि कलियुग के अंत के समय हरेक आत्मा सतयुग से लेकर कलियुग तक जो भी इस ड्रामा में पार्ट बजाने आये हैं चाहे वो आत्मा है, देवात्मा है, धर्मात्मा है, महात्मा है वो सर्वमनुष्यात्मायें ही हैं। हर कोई कलियुग के अंत समय पतित तमोप्रधान स्थिति को प्राप्त हो जाते हैं इसलिए उस पतित आत्म स्थिति से जो भी मत होगी वो सत्य नहीं हो सकती, श्रेष्ठ नहीं हो

बाबा ने आकर भक्ति का फल सत्य ज्ञान हम बच्चों को दिया है, हमें स्पष्ट है कि मनमत हो या परमत हो, मनुष्य मत हो, शास्त्र मत हो या गुरु मत हो वो सम्पूर्ण सत्य नहीं है। क्योंकि कलियुग के अंत के समय हरेक आत्मा सतयुग से लेकर कलियुग तक जो भी इस ड्रामा में पार्ट बजाने आये हैं चाहे वो आत्मा है, देवात्मा है, धर्मात्मा है, महात्मा है वो सर्वमनुष्यात्मायें ही हैं।

सकती। तो ये हम सबकी बुद्धि में स्पष्ट रहे कि जन्म-मरण के चक्र में आने वाली, कलियुग अंत में पहुंची हुई किसी भी आत्मा की मत सत्य नहीं हो सकती, श्रेष्ठ नहीं हो सकती। इसलिए वो कल्याणकारी नहीं हो सकती।

इसलिए बाबा (परमात्मा) हम बच्चों को समझाते हैं कि मनुष्य, मनुष्य की सद्गति नहीं कर सकता। क्योंकि सद्मत से सद्गति होती है। और सद्मति, सत्यमति और सत्यबुद्धि किसी की भी आज नहीं है। नम्बरवार हरेक आत्मा की

मत तमोप्रधान बन गई है। क्योंकि पवित्रता भी हमारी सम्पूर्ण नहीं है क्योंकि हम ब्राह्मण भाई-बहन भी पुरुषार्थी स्थिति में हैं। इसलिए बाबा जो ब्रह्मा मुख से मत देते, विचार देते वो ही सत्य है, कल्याणकारी है। इंसान अपनी मत किस आधार पर देता है, उसमें काफी बातें असर करती हैं। एक है उनकी जो मान्यतायें हैं, विश्वास है, वो मान्यतायें उनकी अपनी हैं, दूसरों के अनुभवों से मिली हुई हैं, समाज से, शिक्षा से, परिवार से मात-पिता से, धर्म से, संस्कृति से इन सबके द्वारा हमें विभिन्न प्रकार की मान्यतायें मिलती हैं। और इंसान जो मान्यता स्वीकार करता है उसी के आधार पर उसकी मत बनती है, ओपिनियन (राय) बनती है।

अब आत्मा अपने अन्दर संस्कारों के साथ जो मान्यता लेकर आती है चाहे माँ-बाप से, परिवार से, शिक्षा से, समाज से, संग से, पढ़ाई से, धर्म से, कल्चर से, जो भी मान्यतायें मिलती हैं वो पूर्ण सत्य नहीं हैं। और विज्ञान की भी जो मतें हैं वो भी फाइनल टूथ नहीं हैं क्योंकि विज्ञान भी मानव मन की ही रचना है। और वो भी हरेक अपनी-अपनी रिसर्च के अनुसार मत देते हैं। इसलिए वो बदलती रहती है। जो लोग ईश्वर में आस्था रखते हैं वो लोग धर्म से मान्यतायें ज्यादा लेते हैं। और जो भौतिकवादी लोग हैं वो विज्ञान से ज्यादा मत लेते हैं लेकिन हमें स्पष्ट रखना चाहिए बुद्धि में कि धर्म भी पूर्ण सत्य नहीं हो सकता और विज्ञान भी पूर्ण सत्य नहीं हो सकता। और यही कारण है कि धर्म भी अनेक हैं, और शास्त्र भी अनेक हैं और वैज्ञानिकों के द्वारा भी समय प्रति समय रिसर्च के नये-नये रिजल्ट समाज के सामने रखे जाते हैं। इसलिए दोनों में मूँझ है। बाबा की मुरली में इतना सुन्दर महावाक्य आता है इसलिए सूत मूँझा हुआ है माना उलझा हुआ है।

- क्रमशः



भद्रक-ओडिशा। एदतल, बासुदेवपुर में आयोजित जगन्नाथ महोत्सव में राज्यपाल प्रो. गणेशी लाल आध्यात्मिक क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए ब्र.कु. मंजू बहन को सम्मानित करते हुए। इस मौके पर पर्यटन एवं संस्कृति राज्यमंत्री ज्योति प्रकाश पाणिग्राही, सांसद मंजुलता मंडल, पंडित संग्राम आचार्य, पूर्व विधायक मुक्तिकान्त मंडल, नेशनल अवॉर्ड टीचर पंडित दयानिधि दास तथा अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे।



दिल्ली-बवाना। त्रिमूर्ति शिव जयंती महोत्सव में मंचासीन हैं स्थानीय विधायक जय भगवान उपकार, पूर्व एसीपी दिनेश कुमार, ब्र.कु. चंद्रिका बहन, बाल कलाकार तथा अन्य।



झालावाड़-राज। महाशिवरात्रि पर आयोजित कार्यक्रम में प्रथम महिला जिला कलेक्टर भारती दीक्षित को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. मीना दीदी। साथ हैं जिला परिषद् अधिकारी श्रीनिधि वीटी, जिला चिकित्सा अधिकारी साजिद खान, लायंस क्लब अध्यक्ष प्रीति बोहरा तथा अन्य।



कपूरथला-पंजाब। 'आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के अंतर्गत अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए बहन परवीन, फिजिकल योगा टीचर, नीलम महाजन, पूर्व एम.सी., क्रिमिनल एंड मेट्रीमोनियल एडवोकेट, कुलवंत कौर, मेयर, सविता चौधरी, एम.सी., हरनंदर कौर, एम.सी., ब्र.कु. लक्ष्मी बहन, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका, ब्र.कु. डोलमा बहन तथा अन्य।



कोरापुट-ओडिशा। शिव जयंती के अवसर पर फस्ट आई.आर.बी.एन. के डॉ. मृत्युंजय खाड़िया एवं उनकी धर्मपत्नी ममता खाड़िया को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. स्वर्णा बहन।



मोकामा-बिहार। माउण्ट आबू (मधुबन) से लौटने पर रेलवे स्टेशन पर ब्र.कु. रोशनी का पुष्प भेंट कर स्वागत करते हुए स्टेशन मास्टर कुमार उमेश शंकर।



करसोग-हि.प्र.। 86वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती महोत्सव पर आयोजित कार्यक्रम में विधायक हीरालाल, उपमंडल अधिकारी नागरिक सनी शर्मा, लोक निर्माण विभाग के अधिशाषी अभियंता अरविंद भारद्वाज, सहायक अभियंता छविंद्र शर्मा, नगर पंचायत की अध्यक्ष सीमा गुप्ता, ब्र.कु. लीला बहन, ब्र.कु. बिंद्रा बहन, ब्र.कु. संजू बहन, ब्र.कु. कृष्ण देव तथा अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।



जालंधर-श्रीन पार्क (पंजाब)। 'आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के अंतर्गत महाशिवरात्रि के अवसर पर शिव ध्वजारोहण के पश्चात् उपस्थित हैं राजेंद्र बेरी, विधायक, मनमोहन सिंह, पार्षद, नगर निगम, राजेश विज, जनरल सेक्रेटरी, प्राचीन देवी तालाब मंदिर, मेजर अमित सरिन, एडीसी, नवा शहर, आशुतोष शर्मा, सीनियर क्रिकेट कोच, वुमेन्स पंजाब, जतिंदर पाल सिंह, बीसीसी क्रिकेट क्लब, जालंधर, ब्र.कु. मीरा दीदी, ब्र.कु. रामदयाल भाई, ब्र.कु. रेखा बहन तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।



कादमा-झोझूकलां (हरियाणा)। 'आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' एवं महाशिवरात्रि के उपलक्ष्य में सेठ किशनलाल वाले मंदिर में आयोजित 'दिव्य संस्कार व संस्कृति के निर्माता शिव' विषयक कार्यक्रम में ज्ञानामृत पत्रिका की सह संपादिका राजयोगिनी ब्र.कु. उर्मिला दीदी, माउण्ट आबू, सुभाष शर्मा, खंड विकास एवं पंचायत अधिकारी, ब्र.कु. वसुधा बहन, क्षेत्रीय संचालिका, ब्रह्माकुमारीज, डॉ. पवन शर्मा, निवर्तमान सरपंच दलवीर गांधी तथा बड़ी संख्या में अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।



नरौरा-उ.प्र.। 86वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती महोत्सव पर रंगोली प्रतियोगिता एवं महिला सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में राजयोगिनी ब्र.कु. सरोज बहन, उ.प्र. संयोजिका, कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग, ब्रह्माकुमारीज, डॉ. हरीश यादव, सहायक निदेशक, एम.एम.एम.ई. मंत्रालय, भारत सरकार, सीताराम मीना, पूर्व आई.ए.एस., एम.एस. प्रसाद, वाइस प्रेसीडेंट मैन्यूफैक्चरिंग, टाटा फर्टिलाइजर, सुधीर शेलके, मुख्य अधीक्षक, नरौरा परमाणु बिजलीघर आदि गणमान्य नागरिक शरीक हुए।

मूंगफली का सेवन हम सर्दियों में किसी न किसी व्यंजन के जरिए जरूर करते हैं जबकि इसका सामान्य रूप से व अन्य किसी भी मौसम में किया गया सेवन भी कई फायदे पहुंचाता है।

ड्राई फ्रूट के मामले में मूंगफली एक ऐसा स्थान रखती है जो बड़ी आसानी से आपको कम से कम दाम में मिल जाती है। अन्य ड्राई फ्रूट के मुकाबले इसका प्रयोग विभिन्न प्रकार के पकवानों को बनाने में किया जाता है। जबकि मूंगफली का सेवन अगर रात में भिगोने के बाद सुबह उठकर किया जाए तो उसके कई बेहतरीन स्वास्थ्य फायदे देखने को मिल सकते हैं। आज हम आपको उन फायदों के बारे में बताएंगे जो मूंगफली को भिगोकर खाने के बाद मिलते हैं।

हृदय रोगों से दिलाए सुरक्षा...

मूंगफली में ऐसे गुण पाए जाते हैं जो दिल की जुड़ी कई प्रकार की बीमारियों से भी सुरक्षा प्रदान करते हैं। वैज्ञानिक अध्ययनों की मानें तो मूंगफली में कार्डियोप्रोटेक्टिव

भीगी मूंगफली के फायदे...

गुण पाया जाता है। इस कारण जो लोग नियमित रूप से कार्डियोप्रोटेक्टिव वाले स्रोत खाद्य पदार्थ का सेवन करते हैं वह अपनी डाइट में मूंगफली को भी शामिल कर सकते हैं। कार्डियोप्रोटेक्टिव एक ऐसा गुण है जो दिल से जुड़ी बीमारियों के खतरे को कई गुणा तक कम कर देता है। इससे शरीर को गर्माहट मिलती है। इससे आपका ब्लड सर्कुलेशन बेहतर बनता है। आपका दिल स्वस्थ तरीके से अपने कार्य को सम्पन्न करता है।

डायबिटीज से छुटकारा...

मूंगफली को भिगोकर खाने से ब्लड शुगर



स्वास्थ्य

सुबह भीगी हुई मूंगफली का नियमित रूप से सेवन कराया जा सकता है। यह उनकी याद करने की क्षमता पर भी सकारात्मक असर डाल सकता है।

आँखों की रोशनी बढ़ाए...

मूंगफली में मौजूद विटामिन आँखों की रोशनी के साथ-साथ याददाश्त भी तेज करता है। इसलिए बच्चों को रोजाना सुबह भीगी हुई मूंगफली जरूर खिलाएं।

खून की कमी को करे पूरा...

आयरन से भरपूर होने के कारण मूंगफली का सेवन एनीमिया की प्रॉब्लम से बचाव करता है। आप भीगी हुई मूंगफली को दूसरे सप्राउट्स के साथ मक्स करके खा सकते हैं। इसके अलावा खून बढ़ाने के लिए गुड़ और मूंगफली खाना भी फायदेमंद होता है।

वजन को करे कम...

फाइबर से भरपूर मूंगफली का सेवन शरीर को एनर्जी देने के साथ-साथ मेटाबॉलिज्म बूस्ट भी करता है। मूंगफली खाने से वजन घटाने में काफी मदद मिलती है।

स्किन को बनाए चमकदार...

हर कोई अपनी स्किन को चमकदार और मॉटेन बनाए रखने के लिए तरह-तरह के ब्यूटी प्रोडक्ट्स का इस्तेमाल करता है। वहीं, भीगी हुई मूंगफली का सेवन करने वाले लोगों को भी त्वचा संबंधित कई प्रकार के फायदे मिल सकते हैं। दरअसल, मूंगफली में एंटीऑक्सीडेंट की मात्रा पाई जाती है। इस कारण यदि आप सुबह-सुबह इसका सेवन करते हैं तो वह दिन भर आपकी त्वचा में ताजगी बरकरार रखने का काम कर सकता है।

पाचन शक्ति को करे मजबूत...

फाइबर एक ऐसा पोषक तत्व है जो पाचन क्रिया को सुचारू रूप से चलाए रखने के लिए अति आवश्यक है। इसलिए फाइबर स्रोत वाले खाद्य पदार्थों को नियमित रूप से भोजन में शामिल किया जाना चाहिए। इसके लिए आप मूंगफली को भी अपनी प्लेट में जगह दे सकते हैं। इससे आप पेट से जुड़ी कई प्रकार की समस्याओं जैसे कब्ज और पेट में दर्द से भी बचे रहेंगे। सुबह खाली पेट गुड़ के साथ भीगी हुई मूंगफली खाने से गैस और एसिडिटी की समस्या दूर होती है।



भोजपूर-वाराणसी(उ.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज के स्थानीय सेवाकेन्द्र की रजत जयंती एवं महाशिवरात्रि के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में क्षेत्रीय निर्देशिका राजयोगिनी ब्र.कु. सुरेन्द्र दीदी, सरसौली सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. वंदना बहन, स्वामी अतुलानंद रेजिडेंशियल स्कूल होलापुर की डायरेक्टर श्रीमति दिव्या विशाल सिंह, संस्थान के क्षेत्रीय प्रबंधक राजयोगी ब्र.कु. दीपेन्द्र तथा बड़ी संख्या में अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।



भुवनेश्वर-बीजेबी नगर(ओडिशा)। शिव जयंती के अवसर पर शिव ध्वजारोहण के पश्चात् सन्तोष कुमार बेहरा, पूर्व आर्मी कप्तान, पूर्व चीफ जनरल मैनेजर पंजाब नेशनल बैंक को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. अंजलि बहन। साथ ही राजयोगिनी ब्र.कु. तपस्विनी बहन, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।



मिश्रिख तीर्थ-उ.प्र.। महाशिवरात्रि पर आयोजित कार्यक्रम में एसएचओ आर.के. सिंह, थाना अध्यक्ष तथा अन्य गणमान्य नागरिक व ब्र.कु. सरस्वती दीदी सहित अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।



मिरजापुर-उ.प्र.। महाशिवरात्रि पर शिव ध्वजारोहण से पूर्व ईश्वरीय स्मृति में बीपीजी कॉलेज के प्राचार्य डॉ. अशोक कुमार सिंह, मिरजापुर आईटीआई के प्राचार्य इंजीनियर प्रमोद शाक्यवर, अचिरल विश्व गायत्री परिवार के पंडित रमाशंकर द्विवेदी, ब्र.कु. बिंदु दीदी, ब्र.कु. आरती तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।



मोतिहारी-बिहार। 86वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती पर अरेराज स्थित बिहार के सबसे प्राचीन सोमेश्वर नाथ मंदिर क्षेत्र में ब्रह्माकुमारीज द्वारा अति आकर्षक शोभा यात्रा निकाली गई। इस यात्रा में शामिल महामंडलेश्वर व अरेराज मंदिर सोमेश्वर पीठाधीश्वर महन्त रविशंकर गिरि जी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मीणा बहन। साथ में ब्र.कु. विभा बहन, ब्र.कु. अनीता बहन, ब्र.कु. आरती बहन व अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।



नई दिल्ली-वसंत विहार। स्थानीय ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र द्वारा 'आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के उद्घाटन एवं महाशिवरात्रि के उपलक्ष्य में 'शिव संदेश शोभा यात्रा' निकाली गई। इस मौके पर मनीष अग्रवाल, काउंसलर, वसंत विहार, तुलसी जोशी, काउंसलर, आर.के. पुरम, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. क्षीरा दीदी तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें शामिल रहे।

तब मैंने अपनी जर्नी शुरू की....

आज आप यहाँ आये हैं। आज आप जो डिसिजन लेंगे वो आपके आज और आगे का डिजाइन करेगा। जैसे आज आप यहाँ बैठे हैं एक दिन मैं वहाँ बैठी थी। बीस साल पुरानी बात है। सिर्फ फर्क ये है कि वो हॉल इतना बड़ा भी नहीं था। एक छोटा-सा हॉल था। और जैसे आप ऊषा दीदी और शीलू दीदी को रोज़ सुनते हैं मैंने तीन दिन आकर, वहाँ बैठकर उनको ही सुना बस। तब तक मुझे बहुत ज्यादा समझ में भी नहीं आया था। लेकिन उन्होंने एक बात कही थी कि परमात्मा डायरेक्ट पढ़ाते हैं। मेरी माता जी ब्रह्माकुमारीज में आती थीं। वो मुझे हमेशा बतातीं कि भगवान पढ़ाते हैं, भगवान पढ़ाते हैं। तार्किक दिमाग को देखकर, वैज्ञानिक दिमाग, मैं प्रूफ (प्रमाण) चाहती थी। परमात्मा को प्रूफ (साबित करना) नहीं किया जा सकता, आत्मा को प्रूफ नहीं किया जा सकता। उनको सिर्फ महसूस किया जा सकता है। अब मेरी जिद्द शुरू होती है कि आप पहले प्रूफ करो। तब तो मैं जर्नी (यात्रा) शुरू करूँ। वो कहने लगे कि आप जर्नी शुरू करो तो प्रूफ अपने आप सामने आ जायेगा। ऐसे कौन जर्नी शुरू करेगा जब तक आप प्रूफ नहीं करोगे कि आप जो कह रहे हैं वो राइट है।

इतनी सारी चीज़ें आपने बता दी हैं कि पहले आप सुबह चार बजे उठो और फिर रोज़ स्टडी भी करो। और फिर ऐसे चलो, ये करो ये नहीं करो, ये खाओ, ये नहीं खाओ। ये राइट है इतना सब करो तो फिर उसके बाद आप प्रूफ दोगे! कभी-कभी न अपनी जिद्द के कारण, अपने अहंकार के कारण हम अपना कभी-कभी क्या कर देते हैं? नुकसान कर देते हैं। फिर मुझे किसी ने एक बहुत सुन्दर बात बताई। किसी ने कहा कि आप मैथ स्टूडेंट हो तो फिर कहा कि अगर मैथ में कुछ प्रूफ करना पड़ता है तो कैसे शुरू करते हैं? फर्स्ट लाइन क्या लिखते हैं आप? ए इज इक्वल टू बी, और लास्ट लाइन क्या लिखते हैं देयर फॉर ए इज इक्वल टू



डॉ. कु. शिवानी, जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

बी। और बीच में क्या होता है जर्नी ऑफ लाइफ। आप प्रूफ करके दिखाएं कि ए इज इक्वल टू बी बिफोर स्टार्टिंग लैट ए इज इक्वल टू बी। हमें ऐसे ही सिखाया है कि पहले अजम्शन से स्टार्ट करना होता है फिर उसको प्रूफ करना होता है। और एंड में हम सॉल्यूशन पर आ जाते हैं। कहते बस वही करना है आप अजम्शन से स्टार्ट करो कि गॉड इज यूअर (भगवान आपका है)। फिर ये भी बात राइट कि अजम्शन से स्टार्ट करो।

फिर मैंने दूसरा क्लेशन पूछा कि कितने दिन लगेंगे पहुंचने में! देयर फॉर ए इज इक्वल टू बी। वो बोले कि वो तो आप पर डिपेंड करता है ना कि आप बाकी पन्ने कितने प्यार से भरते हैं। कोई बहुत जल्दी पहुंच जाते हैं और किसी को टाइम लगता है। किसी को थोड़ा ज्यादा टाइम लगता है। लेकिन जो राइट तरह से लिख रहा है तो वो ए इज इक्वल टू बी पर जरूर पहुंच जायेगा। मुझसे कभी-कभी कोई न कोई पूछता कि आप यहाँ क्यों आये हैं? उनको लगता कि मेरे जीवन में कुछ प्रॉब्लम आई होगी इसीलिए मैं यहाँ आई हूँ। तो वो मुझसे प्यार से पूछते कि आपके जीवन में क्या हुआ था? मैंने कहा कुछ भी नहीं। बोले कि आप इंजीनियरिंग कर

रहे थे आपने उसको छोड़ दिया और आप यहाँ आ गये। तो कुछ तो जरूर हुआ होगा! ये हमारे बिलीफ सिस्टम है। एक हमारा बिलीफ सिस्टम है कि एक ये हमारा जीवन है और एक दूसरी जीवन है। आध्यात्मिकता एक अलग जीवन नहीं है। हमें लगता है कि एक ये लाइफ है फैमिली, रिश्ते, जॉब, प्रोफेशन और एक है स्पिरिचुअलिटी। क्या ये सच है? इसीलिए आध्यात्मिक जीवन कोई अलग नहीं है।

एक ग्रुप हमारे साथ आया उसमें एक भाई था 40-45 की एज के आसपास होगा। कहते मैंने अपने सीनियर को बोला कि सर मैं शुक्रवार, शनिवार और रविवार छुट्टी पर जा रहा हूँ। उन्होंने कहा कि ठीक है चले जाओ। कहते फिर मैंने सोचा कि मैं इनको बता तो दूँ कि मैं कहाँ जा रहा हूँ। तो कहते मैंने उनको बताया कि सर मैं स्पिरिचुअल रिट्रीट के लिए माउण्ट आबू जा रहा हूँ। तो उनका फर्स्ट क्लेशन उसके बाद था कि ये थोड़ा जल्दी नहीं है? हम यही सोचते हैं? क्या हमने यह सोचा था कि यह जीवन का कौन-सा चरण है? सोचने की कला। सही सोचना, सही बोलना, सही व्यवहार करना और इमोशनली पॉवरफुल रहना ये जीवन की कौन-सी एज में शुरू करना चाहिए? उन्होंने बताया कि वो पहले से ही थोड़ा लेट हो गया। चालीस साल बीत गए जैसे उम्र बढ़ती है तो संस्कार थोड़े से कैसे होते जाते हैं, कड़क होते जाते हैं। और इगो थोड़ा-सा क्या होता जाता है? बढ़ता जाता है। लेकिन हमारी बॉडी, एज ये मतलब नहीं रखती है मेरे अपने संस्कारों को चेंज करने में। ये डिपेंड करता है हमारे दृढ़ निश्चय पर, मेरी इच्छा शक्ति पर। क्यों बदलना है, हम जानते हैं। कैसे चेंज करना है, हम जानते हैं। महत्वपूर्ण ये है कि हम चेंज होना चाहते हैं। चेंज होना चाहते हैं तो एक थॉट में चेंज हो जायेंगे। तो तब मैंने अपनी जर्नी शुरू की।

- क्रमशः

यह जीवन है

किसी को भी बुरा नहीं समझें, बुरा न चाहें और बुरा न करें। किसी को बुरा समझने से हम भी बुरे बन जाएंगे और हमारे में भी वो बुराई आ जाएगी। क्योंकि जब हम किसी को बुरा समझते हैं इसका मतलब हम अपने में बुराई को निमंत्रण देते हैं। जिससे उस बुराई के साथ हमारा भी सम्बन्ध जुड़ जाता है। इसलिए हमें कभी भी किसी की भी बुराई को नहीं देखना है। हमेशा सभी की अच्छाई को ही देखना है। तभी हम अपने में अच्छाई को धारण कर पाएंगे। और जब हम सभी अपने जीवन में अच्छाई को धारण करेंगे तो सारा संसार अच्छा बन जाएगा अर्थात् सुखी बन जाएगा।



बड़ी पटन देवी कॉलोनी-पटना सिटी (बिहार)। नये भवन 'दिव्य प्रकाश' के उद्घाटन कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए मेयर सीता साहू, ब्र.कु. डॉ. बनारसी लाल शाह, सेक्रेटरी, मेडिकल विंग, ब्रह्माकुमारीज, उपक्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. रुक्मिणी दीदी, ब्र.कु. संगीता बहन, पटना सिटी उपसेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रानी बहन तथा अन्य ब्र.कु. बहनें।



हाथरस-उ.प्र.। 86वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती महोत्सव पर आयोजित कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज की जनपद प्रभारी राजयोगिनी ब्र.कु. सीता दीदी, समाज सेविका किरन कपूर, समाजसेवी गौरीशंकर गौतम, एड. अतुल आंधीवाल, समाजसेवी अशोक कपूर, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका सादाबाद संचालिका ब्र.कु. भावना बहन, जलेसर से ब्र.कु. सुनीता बहन, माउण्ट आबू से ब्र.कु. सुरेश भाई, दाऊजी से ब्र.कु. सीमा बहन, केशवदेव बघेल एवं अन्य गणमान्य अतिथियों सहित बड़ी संख्या में ब्र.कु. भाई-बहनें उपस्थित रहे।



रोहतक-शीला बायपास (हरियाणा)। महाशिवरात्रि के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में मेयर मनमोहन गोयल, एलपीएस बोसार्ड के एमडी राजेश जैन, श्री श्री 1008 महामंडलेश्वर स्वामी राघवेंद्र जी महाराज आदि गणमान्य लोग शामिल रहे। अतिथियों को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रक्षा बहन।



चित्तौड़गढ़-राज.। 86वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती पर शिव संदेश वाहन रैली को शिवध्वज दिखाकर रवाना करते हुए ब्र.कु. आशा बहन, ब्र.कु. शिवली बहन, ब्र.कु. मीना बहन, ब्र.कु. मधु बहन, ब्र.कु. अनीता बहन, रेलवे सुरक्षा बल के सब इंस्पेक्टर जनक सिंह गुर्जर तथा नाथू लाल भाई।



शमशाबाद-आगरा (उ.प्र.)। 86वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती महोत्सव पर बीके पार्क में आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. लक्ष्मी बहन। मंचासीन हैं डॉ. स्वाति पाठक, समाजसेवी अरुण चक, ब्र.कु. सुनील दीदी तथा अन्य भाई-बहनें।



अमेठी-उ.प्र.। महाशिवरात्रि के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में शिव ध्वजारोहण के पश्चात् चैयरमैन श्रीमति चंद्रमा देवी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सुमित्रा बहन व ब्र.कु. सुषमा बहन।



परमात्म ऊर्जा



विघ्नों को मिटाने की युक्तियां अगर सदैव साथ हैं तो पुरुषार्थ में ढीले नहीं होंगे। युक्तियां भूल जाते हैं तो पुरुषार्थ में ढीला हो जाता है। एक-एक बात के लिए कितनी युक्तियां मिली हैं? प्राप्ति कितनी बड़ी है और रास्ता कितना सरल है। जो अनेक जन्म पुरुषार्थ करने पर भी कोई नहीं पा सकते। वह एक जन्म के भी कुछ घड़ियों में प्राप्त कर रहे हो। इतना नशा रहता है ना! 'इच्छा मात्रम अविद्या' ऐसी अवस्था प्राप्त करने का तरीका बताया। ऐसी ऊंची नॉलेज और कितनी महीन है। जीवन में इतना ऊंचा लक्ष्य कोई रख नहीं सकता कि मैं देवता बन सकता हूँ। यह कब सोचा था कि हम ही देवता थे? सोचा क्या था और बनते क्या हो? बिन मांगे अमूल्य रत्न मिल जाते हैं। ऐसे पदमा पदम भाग्यशाली अपने को समझते हो? प्रेसिडेंट आदि भी आपके आगे क्या हैं? इतनी ऊंची दृष्टि, इतना ऊंचा स्वमान याद रहता है कि कब भूल भी जाते हो? स्मृति-विस्मृति की चढ़ाई उतरते-चढ़ते हो? गन्दगी से मच्छर आदि प्रकट

होते हैं इसलिए उनको हटाया जाता है। वैसे ही अपनी कमजोरी से माया के कीड़े पकड़ लेते हैं। कमजोरी को आने न दो तो माया आयेगी नहीं। सदैव यह याद रखो कि सर्वशक्तिवान के साथ हमारा सम्बन्ध है। फिर कमजोरी क्यों? सर्वशक्तिवान बाप के बच्चे होते भी माया की शक्ति को खलास नहीं कर सकते। एक बात सदैव याद रखो कि बाप मेरा सर्वशक्तिवान है। हम सभी से श्रेष्ठ सूर्यवंशी हैं। हमारे ऊपर माया कैसे वार कर सकती है! अपना बाप, अपना वंश याद रखेंगे तो माया कुछ भी नहीं कर सकेगी। स्मृति स्वरूप बनना है। इतने जन्म विस्मृति में रहे फिर भी विस्मृति अच्छी लगती है? 63 जन्म विस्मृति में थोखा खाया, अब एक जन्म के लिए धोखे से बचना मुश्किल लगता है? अगर बार-बार कमजोर बनते, चेकिंग नहीं रखते तो फिर उनकी नेचर ही कमजोर बन जाती है। अवस्था चेक कर अपने को ताकतवर बनाना है, कमजोरी को बदल शक्ति लाना है।



सासाराम-बिहार। महाशिवरात्रि के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान ईश्वरीय स्मृति में जदयू नेता(बालू ठेकेदार)आलोक कुमार सिंह, जिला पार्षद रेशम बहन, ब्र.कु. बबिता बहन तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।

कथा सरिता



एक दिन की बात है। सुनीता को बुखार चढ़ गया, उसकी माँ उसको डॉक्टर के पास लेकर गयी तो पता चला कि उसको डेंगू हो गया है। डॉक्टर ने पचास हजार रुपये मांगे। सुनीता की माँ के पास कुछ गहने थे। उसने अपने गहनों को बेच दिया और कुल मिलाकर चालीस हजार ही हो पाया। सुनीता की माँ ने डॉक्टर से बोला आप इतना ले लो और मेरी सुनीता को बचा लो। लेकिन डॉक्टर ने बोला हम तो पूरे पैसे लेने के बाद ही एडमिट करते हैं, उसकी माँ रोती रही लेकिन कोई ने नहीं सुना।

वह अपनी मालकिन के पास गयी और उसको सारी बात बतायी तो उसने भी बोला मैं नहीं दूंगी इतना पैसा। सुनीता की माँ का रो-रो कर बुरा हाल हो गया था, पूरा दिन बीत गया और उसकी बेटी की तबियत और खराब हो गयी। उसकी माँ ने पूरी रात कुछ भी नहीं खाया और कब

सो गयी यह भी पता नहीं चला। सुबह जब वो

गयी।

शिक्षा : कब तक हम लोग ऐसा करेंगे, पैसा ही सबकुछ नहीं होता है। आज सुनीता के साथ है कल आप के साथ भी ऐसा हो सकता है, इसलिए दूसरों

दूसरों की मदद करना सीखें...



सोकर उठी तो उसने देखा कि सुनीता अभी भी सोयी है, उसके पास जाकर उसके हाथ को पकड़ा तो डर गयी और जोर से रोने लगी क्योंकि सुनीता मर चुकी थी। सिर्फ दस हजार रुपये के लिए किसी ने भी उसकी मदद नहीं की और उसकी जान चली

की मदद जरूर करें।

हम सब लोग किसी न किसी बुरी आदत से परेशान रहते हैं और बहुत ही कोशिश करने के बाद वो आदत नासूर बन जाती है और उस आदत को छोड़ना बहुत मुश्किल हो जाता है। अगर हम लोग अपनी बुरी आदत को कंट्रोल कर लें तो कभी भी असफल

हूँ, बड़े होने पर सब छूट जायेगी। लेकिन उसका पिता इस बात से बहुत ही चिंतित रहता था।

एक दिन उसके नगर से एक महात्मा जी आये तो उसको पता चला और वह महात्मा जी के पास गया। उनको अपने बेटे के बारे में सब कुछ साफ-साफ

महात्मा जी ने उस लड़के से उसे उखाड़ने को कहा तो वह तुरंत गया और पेड़ को उखाड़ कर फेंक दिया। थोड़ी दूर और जाने पर एक और पेड़ आया तो महात्मा जी ने उसको भी उखाड़ कर फेंकने को कहा- उसने उसको भी उखाड़ दिया।

लड़के के पिता जी सबकुछ बहुत ही ध्यान से देख रहे थे। कुछ दूर और चलने के बाद एक और बड़ा और मजबूत-सा पेड़ दिखाई दिया, महात्मा जी ने लड़के से कहा- इसको भी उखाड़ दो, वह बहुत ही तेजी से गया लेकिन वह उस पेड़ को नहीं उखाड़ पाया। क्योंकि वह बहुत मजबूत हो गया था। फिर महात्मा जी ने उस लड़के को बुलाया और बोला जिस तरह तुम इस बड़े पेड़ को नहीं उखाड़ पा रहे थे उसी तरह तुम अपनी बुरी आदत बड़े होने पर नहीं बदल सकते हो। लड़का इस बात को समझ गया और अपनी सारी बुरी आदत छोड़ने की कसम खा ली।

सीख: इस कहानी से हमें यही सीख मिलती है कि अगर हम लोग अपनी बुरी आदत जल्दी नहीं छोड़ेंगे तो बाद में हम लोगों को बहुत ज़्यादा परेशानी होगी।



बुरी आदत

नहीं होंगे। बहुत समय पहले की बात है, एक बहुत ही धनी आदमी था, उसका एक ही बेटा था और उसकी बहुत सारी आदतें बहुत ही बुरी थीं। जब भी उसका पिता उसको बुरी आदत छोड़ने को बोलता तो बस वह एक ही जवाब देता - अभी तो मैं छोटा

बता दिया। फिर महात्मा जी ने बोला - आप कल सुबह अपने बेटे को मेरे पास लेकर आइये। अगले दिन सुबह ही वह अपने बेटे को लेकर महात्मा जी के पास पहुंच गया। महात्मा जी उसको लेकर बगीचे में चले गए और रास्ते में एक छोटा-सा पेड़ पड़ा,



कोटा जंक्शन-राज. 86वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती पर आयोजित कार्यक्रम में डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, प्रेसीडेंट, ब्लड बैंक सोसायटी कोटा कैसर हॉस्पिटल, मुकेश गालव, महामंत्री, वेस्ट सेंट्रल रेलवे एम्प्लॉय यूनियन कोटा, डॉ. जगदीश शर्मा, अध्यक्ष, लायंस क्लब, डॉ. प्रो. आर.के. तंवर, ऑन्कोलॉजिस्ट आदि गणमान्य अतिथियों को ईश्वरीय सौगात भेंट करने के पश्चात् उपस्थित हैं ब्र.कु. उर्मिला बहन तथा ब्र.कु. प्रीति बहन।

राजयोग के प्रयोग ने बचाया मुझे

ब.कु. आदेश भाई, पीलीकोटी, दिल्ली

आरम्भ किया। हमारे ब्रह्माकुमारी सेन्टर में भी सब भाई-बहनों ने शीघ्र स्वास्थ्य लाभ पहुंचाने के लिए राजयोग का प्रयोग किया। मैं बाबा के प्यार में खो जाता था।

तीन महीने के बाद शरीर का दर्द पूरी तरह ठीक हो गया। डॉक्टर भी आश्चर्य से कहने लगे कि ये तो बहुत बड़ा वण्डर है। तुम्हें 16 टांके लगे, सिर में इतना कांच भरा, तीन-तीन जगह फ्रैक्चर हुआ और आप इतना जल्दी कैसे ठीक हो गये! मैंने कहा- मैं नित्य राजयोग का अभ्यास करता हूँ। जब लौकिक सम्बन्धी आये तो उन्होंने हमें वह अखबार दिखाया। कहा देखो तुम्हारी तो मरने की न्यूज छपी है। मुझे नहीं मालूम था कि बाबा ने कौन-सी सेवा कराने के लिए मरजीवा जन्म दिया।

कुछ समय के पश्चात मुझे मानेसर, हरियाणा में परमआदरणीय दादी गुलज़ार जी की कार चलाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, तब मुझे एहसास हुआ कि शिव बाबा और ब्रह्मा बाबा ने अपने रथ की सेवा कराने के लिए मुझे यह नया जन्म दिया। मुझे दादी हृदयमोहिनी जी से इतना अलौकिक प्यार मिला जिसे शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता। अगर मैं मेरे जीवन में शिव बाबा और ब्रह्मा बाबा द्वारा सिखाये जा रहे राजयोग का अभ्यास नहीं करता तो ऐसे भयंकर एक्सीडेंट से बचना असम्भव था। यह है राजयोग द्वारा परमात्मा की प्रत्यक्ष मदद की कमाल। मैं ब्रह्मा बाबा, शिव बाबा और परमआदरणीय दादी गुलज़ार जी सहित ब्रह्माकुमारी संस्था के समस्त भाई-बहनों का बहुत-बहुत शुक्रगुज़ार हूँ।



में पलटी, चालक की मृत्यु।" कुछ लोगों ने हमें गाड़ी से निकाल कर कृष्णा नर्सिंग होम, हल्द्वानी में भर्ती कराया। वहां के डाक्टर ने कहा कि यह तो बचना बहुत मुश्किल है। मुझसे पूछा- तुम्हें कैसा लग रहा है? मैंने बोला- मुझे सांस लेने में बहुत तकलीफ हो रही है, तेज दर्द भी हो रहा है लेकिन मृत्यु का तनिक भी भय नहीं है। शरीर में दर्द है लेकिन मौत क्या होती है उसकी कोई परवाह नहीं थी फिर मुझे ऑक्सीजन दी गई। इसके बाद एम्बुलेंस से मुझे दिल्ली में एक नर्सिंग होम लाया गया। उस समय मेरे साथ कोई मित्र-सम्बन्धी नहीं थे। 3 दिन के बाद मेरे सिर से टूटा कांच निकाला गया। डॉ. बोला जीवन भर तुम्हें दर्द रहेगा। मैंने बाबा के कमरे में मेडिटेशन करने लिए कहा- बाबा के कमरे में मुझे दो भाई पकड़कर ले जाते थे। मैंने बाबा के कमरे में तीन-तीन घण्टे बैठकर योग करना

बात सन् 2001 की है। मुझे राजयोग का अभ्यास करते हुए करीब 3 वर्ष ही हुए थे। मैं एक कम्पनी वालों के साथ कार से नैनीताल घूमने जा रहा था। मेरे साथियों की 5 अन्य कारें भी चल रही थीं। इसी बीच रास्ते में कालाढ़ूंगी में एक कार से मेरा ऐसा एक्सीडेंट हुआ जिससे कार पहाड़ी से करीब 25-30 फीट की गहराई में गिर गई। जैसे ही हमारी कार गहरी खाई में पलटी तभी मेरा सिर जोर से शीशे में लगा और शीशा टूट गया और सारा कांच सिर में घुस गया। उस वक्त मुझे शरीर से बिल्कुल अलग होने का अनुभव हो रहा था। आँखों के सामने काली रात की तरह अंधेरा-सा छा गया, और तभी मुझे, मेरे सामने सफेद वस्त्रों में प्रजापिता ब्रह्मा बाबा दिखाई दिए और मैं ब्रह्मा बाबा से बात करने लगा- बाबा, किसी की गाड़ी खाई में गिर गई है, उस बिचारे को बहुत चोट लगी होगी इसलिए वो चिल्ला रहे हैं।

ब्रह्मा बाबा ने तीन बार मुझे कहा- बच्चे, तुम शान्त हो जाओ, सब ठीक हो जायेगा। इतना कहकर बाबा अंतर्धान हो गये। जब मैं वापस शरीर में आया तो मेरे शरीर में बहुत भयंकर दर्द हो रहा था, तब मुझे पता चला कि अरे मैं ही तो गाड़ी के अन्दर हूँ। मेरी ही गाड़ी नीचे गिरी है, मुझे ही चोट लगी है, गंभीर चोट होने के कारण तब मैं बेहोश हो गया। हाथ भी फ्रैक्चर हो गये थे। 3-4 जगह से बहुत ज़्यादा खून बहा। सबके मुख से निकला यह बचेगा नहीं। अखबार वालों ने भी मेरा फोटो खींचा और दूसरे दिन अखबार में फोटो सहित छपा, "टोयोटा क्वालिफ़ कार गहरी खाई



बहादुरगढ़-हरियाणा। होली के पावन पर्व पर माननीय मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्‌टर को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. विनीता दीदी, ब्र.कु. सुरेन्द्र तथा अन्य।



मुरादाबाद-सिविल लाइन(उ.प्र.)। बुद्ध बाज़ार चौक के नाम को बदल कर ब्रह्माकुमारीज चौक किया गया। इसके उद्घाटन कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए मेयर विनोद अग्रवाल। साथ हैं पार्षद गौरव श्रीवास्तव, ब्र.कु. आशा दीदी तथा ब्र.कु. शील दीदी।



मोहाली-पंजाब। ब्रह्माकुमारीज की पूर्व मुख्य प्रशासिका दादी हृदयमोहिनी के प्रथम पुण्य स्मृति दिवस पर उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए ब्र.कु. प्रेमलता दीदी, निदेशिका, ब्रह्माकुमारीज, मोहाली व रोपड़ सर्किल, ब्र.कु. रमा दीदी, संचालिका रूपनगर सेवाकेन्द्र तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।



कोटद्वार-उत्तराखण्ड। महाशिवरात्रि के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में केक काटते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. ज्योति बहन तथा गणमान्य अतिथिगण।



फतेहपुर-उ.प्र.। शिवरात्रि के उपलक्ष्य में सेवाकेन्द्र में आने पर एस.बी.आई. शाखा प्रबंधक अविनाश जी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. शीला बहन।



कोटा-राज.। महाशिवरात्रि के अवसर पर 'सर्वधर्म समागम' का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए कोटा के सम्भागीय आयुक्त दीपक नंदी, हिन्दू धर्म से शैलेंद्र भागवत, अध्यक्ष, गोदावरी धाम, मुस्लिम धर्म से मौलवी डॉ. मोहम्मद नईम, प्रोफेसर, गवर्नमेंट कॉलेज, ईसाई धर्म से फादर संतोष फ्रांसिस, चर्च माला रोड, सिक्ख धर्म से मनजीत सिंह, गुरुद्वारा अध्यक्ष, जगदीश शर्मा, अध्यक्ष, लायन्स क्लब, अशोक माहेश्वरी, महासचिव, कोटा व्यापार संघ, हेमलता गांधी, समाजसेविका तथा ब्र.कु. उर्मिला बहन, कोटा संभाग प्रभारी।



बड़ी पटन देवी कॉलोनी-पटना सिटी(बिहार)। शिव जयंती पर आयोजित प्रभात फेरी का शुभारंभ करते हुए हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. नरेश चंद्र माथुर, स्थानीय उपसेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रानी बहन, ब्र.कु. मनीष भाई तथा अन्य।



बहादुरगढ़ से.2-हरियाणा। 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के तहत महाशिवरात्रि पर आयोजित कार्यक्रम में युद्धवीर चैयरमैन, हरियाणा प्रदेश अध्यक्ष चैयरमैन एसोसिएशन, प्रदीप कौशिक, मंदिर ट्रस्टी, कुलदीप छिकारा, समाजसेवी, कुलदीप राठी, समाजसेवी, ब्र.कु. विनीता दीदी, ब्रह्माकुमारीज बहादुरगढ़ की मुख्य संचालिका ब्र.कु. अंजली दीदी, ब्र.कु. रेनु बहन, ब्र.कु. अमृता बहन तथा बड़ी संख्या में अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।



मथुरा-रिफाइनरी नगर(उ.प्र.)। महाशिवरात्रि पर आयोजित 'शिव संदेश यात्रा' कार रैली को शिवध्वज दिखाकर रवाना करते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. कृष्णा बहन, स्थानीय पार्षद सुमित वर्मा, मथुरा रिफाइनरी के पदाधिकारी गण तथा ब्र.कु. भाई-बहनें।



मीरगंज-गोपालगंज(बिहार)। 'आज़ादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के अंतर्गत महाशिवरात्रि पर शिव ध्वजारोहण के पश्चात् नगर परिषद् कार्यपालक पदाधिकारी डॉ. अजीत कुमार शर्मा एवं लायन्स क्लब के रवि कुमार को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सुनीता बहन, ब्र.कु. कांति बहन, ब्र.कु. उर्मिला बहन तथा ब्र.कु. रूबी बहन।



मोहाली-पंजाब। महाशिवरात्रि के अवसर पर श्री सनातन धर्म मंदिर फेज 7 में ब्र.कु. सुमन बहन व ब्र.कु. अदिति बहन को सम्मानित करने के पश्चात् उपस्थित हैं श्रीमति अनुराधा आनंद, म्युनिसिपल काउंसलर वार्ड 11, श्रीमति सुनीता नरूला, प्रधान तथा महिला संकीर्तन मंडल फेज 7 की अन्य सदस्य।

हम सभी समाज के वो हिस्से हैं जिसे कभी काटा नहीं जा सकता, अलग नहीं किया नहीं जा सकता। उसको अलग तरीके से देखा नहीं जा सकता। लेकिन इतने सारे समाज में वर्ग हैं, इतने सारे लोग समाज में काम कर रहे हैं सभी अपने-अपने घरों में, अपने-अपने कामों में, अपने-अपने ऑफिस में व्यस्त हैं। लेकिन जिंदगी के कुछ ऐसे निर्णय होते हैं जो शुरू में कुछ वर्षों के बाद लेने पड़ते हैं लेकिन वो निर्णय लेने में कई बार जल्दी होती है तो कई बार देर हो जाती है। लेकिन कई जो इस निर्णय को जल्दी ले लेते हैं वो जीवन में शायद वो कुछ कर पाते हैं जो उनको करना चाहिए। लेकिन कई बार निर्णय लेने में देरी हो जाती है और वो निर्णय सही है, गलत है का फैसला भी हम शायद अंतर्द्वंद्व की स्थिति में करते हैं। वो निर्णय जो हम लेते हैं उससे हम कई बार मात भी खा जाते हैं। तो आज का जो विषय है इसी गूढ़ प्रश्न को लेकर है कि निर्णय अखिर ले कौन सकता है।

आध्यात्मिकता एक साइलेन्स है। जब हम गहरी शांति के साथ बैठकर किसी भी चीज को सोचते हैं, महसूस करते हैं तो हमको बहुत सारे प्रश्नों का हल मिलता है। अगर पूरी दुनिया को थोड़ा-सा दूर से देखते हैं कि हर कोई किसी न किसी बन्धन से जकड़ा हुआ है या जुड़ा हुआ है। बन्धन से जकड़ा ही होता है खैर जुड़ा तो होता नहीं। और जब भी कोई व्यक्ति कोई कार्य कर रहा होता है तो कोई न कोई उसका मोटिव होता है, कोई न कोई उद्देश्य होता है, कोई न कोई जरूरत होती है, कोई न कोई नियत होती है उसी आधार से जुड़ता है तो व्यक्ति जब ये सब कर रहा होता है तो किसी न किसी के



जीवन में निर्णय कौन ले सकता है...!

लिए कर रहा होता है। एक सोच, एक संकल्प चला कि इस दुनिया में कम्प्यूज कौन है और शक्तिशाली कौन है! दोनों को हम अलग-अलग दायरों से चेक करते हैं। इस दुनिया में शक्तिशाली वो है जो इंसान निर्बंधन है, बंधनमुक्त है मन से। तन से नहीं भी हो सकता है लेकिन मन से तो खैर हो ही सकता है। तो जो व्यक्ति बंधनमुक्त है वो हमेशा बंधनमुक्त है।

मतलब जिस व्यक्ति के दिल में इस दुनिया का कोई भी व्यक्ति, कोई वैभव, कोई पदार्थ, उसके किसी भी चीज के लिए आड़े नहीं आता हो, वो व्यक्ति बहुत शक्तिशाली है। लेकिन जिस भी व्यक्ति को इस दुनिया में आगे बढ़ने का भाव है, मन करता है, बहुत कुछ उमंग-उत्साह लेने का मन करता है, कहीं कुछ जुड़ाव है, आसक्ति है, आकर्षण है, बहुत गहरा लगाव है वो व्यक्ति कभी भी इस दुनिया में एक निष्पक्ष रूप से निर्णय लेने में असमर्थ होता है।

अपने पूर्वाग्रह की स्थिति से त्रस्त और तनाव ग्रस्त रहता है कि क्या होगा। सबसे पहले उसको अपनी फैमिली, अपना बैकग्राउंड याद आता है। बाद में उसको समाज और सोसाइटी की स्थिति याद आती है।

तो आप पूरी दुनिया को ऐसे ऑब्जर्व करके देखें, बड़े ध्यान से देखेंगे तो आपको पता चलेगा कि चाहे वो आध्यात्मिकता के क्षेत्र में ही क्यों न हो। चाहे वो कितना ही गहराई से आत्मा को जानता हो, समझता हो लेकिन समझने के बावजूद भी अगर उसके निर्णय लेने में कहीं असक्षम स्थिति है तो उसका कारण है आसक्ति, आकर्षण। कहीं न कहीं गहरा लगाव। और वो लगाव उसको निर्णय लेने नहीं देता। अगर निर्णय लेता भी है तो वो झुकाव वाला लेता है, एक तरफा लेता है और हमेशा अपने आप को फंसा हुआ महसूस करता है। तो खुशी का

वो क्यों, क्योंकि किसी भी व्यक्ति का किसी भी स्थिति में चाहे वो माता से लगाव हो, पिता से, वस्तु से, घर से, परिवार से, बिजनेस से वो व्यक्ति कभी भी कोई निर्णय लेने में असक्षम है। उसको डर है वो हमेशा

जो दायरा है वो बंट जाता है। खुशी कभी बांटी नहीं जाती। खुशी का कभी बंटवारा नहीं होता। लेकिन मैंने आपकी खुशी के लिए किया, मैंने इस बात के लिए किया, नहीं। कहते हैं समाज एक सोशल फैक्ट है। इंग्लिश में कहावत है सोसाइटी के सोशल फैक्ट। मतलब सामाजिक तथ्य क्या कहता है हर कोई समाज को जिम्मेदार ठहराता है। लेकिन समाज हमसे है, हम समाज से नहीं। तो



डॉ. कु. अनुज, दिल्ली

हमारा निर्णय समाज निर्धारित करता है।

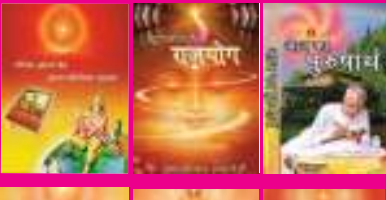
हम अगर समाज के दायरों को देखकर निर्णय लेने लग गये तो अपने कल्याण को

भूल जायेंगे। समाज के कल्याण को भूल जायेंगे, देश के कल्याण को भूल जायेंगे और स्थिति बदल जायेगी। आज समाज डिसाइड कर रहा है हमें निर्णय लेने में। माना जो हमारा खुद का समाज है, जिनके बीच में हम रहते हैं, पलते हैं, बढ़ते हैं वो लोग हमारे लिए निर्णय लेते हैं और हम भी उनके लिए निर्णय लेते हैं इसलिए पूरी जिंदगी दुःखी रहते हैं।

तो निर्णय इस दुनिया में वो ले सकता है जो निष्पक्ष हो, जो बंधनमुक्त हो, जो अपने आपको कल्याणकारी भाव से रखता हो, जो कल्याणकारी सोच वाला हो, जो बेहद की सोच वाला हो वो व्यक्ति कभी भी इस दुनिया में असफल नहीं हो सकता। इसीलिए अगर निर्णय लेना है तो बेहद की सोच और बेहद के कल्याण की बात को लेकर आगे बढ़ें और जीवन में सफल हों।

उपलब्ध पुस्तकें

जो आपके जीवन को बदल दें



अनुभव - मेरा नाम भैरव नाथ है। मेरा अपनी साथी टीचर से चार महीने पहले झगड़ा हो गया था। मैंने आपके समाधान कार्यक्रम में क्षमा करने और क्षमा मांगने की बात सुनी तो मैंने सुबह उठकर ये प्रयोग किया। चार दिन मैंने ये प्रयोग किया और पांचवें दिन ही मेरे साथी टीचर का फोन आ गया मुझे माफ करना मुझसे गलती हुई। मैं आपसे मिलना चाहता हूँ। मुझे जैसे अपने कानों पर तो विश्वास ही नहीं हुआ कि ये कैसे हो गया। मैं उनसे मिलने जा ही रहा था कि मेरी पत्नी ने मुझे रोका मत जाओ घर में कुछ काम है। मैं नहीं जा पाया लेकिन वो खुद ब खुद मेरे घर पर आये। सचमुच मैंने ये पाया कि राजयोग के प्रयोग अद्भुत हैं, इसके लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

प्रश्न : मैं रेलवे से रिटायर्ड चन्द्रकिशोर ठाकुर हूँ। सभी बच्चे वेल सेटल्ड हैं। घर में भी सभी सुख-सुविधाओं के साधन हैं। किसी चीज की कोई कमी नहीं है। लेकिन फिर भी मेरा मन बहुत परेशान रहता है। कई बार तो मैं अकारण ही बहुत परेशान हो जाता हूँ। इसका क्या कारण है, कृपया मुझे कुछ सुझाव दें?

उत्तर : मैं आपको सबसे पहले राजयोग सीखने की सलाह दूँगा और सिर्फ राजयोग ही नहीं बल्कि आप रोज सेवाकेन्द्र पर जाकर ईश्वरीय ज्ञान का श्रवण करें। ये जो आपको परेशानी रहती है, खुशी नहीं रहती या बिना मतलब मन उचाट-सा रहता है, इसके कई कारण हो सकते हैं। निगेटिव थिंकिंग हो सकती है। आप फ्री रहते हैं तो अगर टीवी ज्यादा देखते हैं तो भी ये कारण बन सकता है। क्योंकि आजकल टीवी, इंटरनेट पर बहुत निगेटिव चीजें आ गई हैं जिनके लोग शिकार हो रहे हैं। और दूसरा कारण जो देखने में आता है कि जन्म-जन्म का जो कार्मिक अकाउंट होता है। हमने हज़ारों साल से जो कर्म किए हैं वो सबकॉन्शियस माइंड (अवचेतन मन) में प्रिंट हैं, छुपे हुए हैं तो उनसे निगेटिव एनर्जी बहुत निकल रही है क्योंकि मनुष्य के पाप ज्यादा रहे और पुण्य कम। विकारों को भी हम पाप ही कहते हैं। विकार और पाप दोनों मिक्स होकर सबकॉन्शियस माइंड में जो स्टोर हैं, भरे हुए हैं उनसे जो लगातार निगेटिव एनर्जी ब्रेन को पहुंच रही है वो भी मनुष्य को कहीं न कहीं परेशान करती रहती है। इसलिए अगर आप ईश्वरीय ज्ञान लेंगे तो आपको रोज नये थॉट्स मिलेंगे, और जीवन जीने का एक नया तरीका मिलेगा। आपके पास जो फ्री टाइम रहता है उसको कुछ अच्छे कार्यों

में, सेवाओं के कार्य में लगाने का आपको प्लान मिलेगा, एक अच्छी प्लानिंग मिलेगी। और जब आप राजयोग का अच्छे से अभ्यास करेंगे तो आपके अन्दर जो निगेटिव एनर्जी है या फिर जो कार्मिक अकाउंट हैं, बुरी चीजें जो सबकॉन्शियस माइंड में भरी हुई हैं वो क्लीन होती जायेंगी और आपका मार्ग साफ होता

मन की बातें

- राजयोगी ब्र. कु. सूर्य



जायेगा। और आप अपनी जीवन की अंतिम यात्रा को एनर्जॉय करेंगे।

प्रश्न : मेरी बेटी ने दो मास पहले 12वीं क्लास का रिजल्ट आने के बाद सुसाइड कर लिया। वो पास हो गई थी। परिवार की तरफ से भी उसपर कोई दबाव भी नहीं था। उसके सभी दोस्तों से भी हमने बात की लेकिन ऐसी-वैसी कोई बात नहीं थी। हमारी समझ में ही नहीं आ रहा कि उसने ऐसा क्यों किया! घर का माहौल तब से बहुत गमगीन रहता है। मैं बाबा के ज्ञान में हूँ लेकिन मन बहुत अशांत हो गया है, क्या करें?

उत्तर : क्या होता है, सुसाइड करने के बाद आत्मा भटक जाती है, उसको पुनर्जन्म नहीं मिलता। उसे कुछ अच्छे वायब्रेशन्स की जरूरत होती है जिससे उसका मन शांत हो जाये। चाहे उसने सुसाइड इमोशनल होकर कर लिया हो। जो कुछ भी किया तब आत्मा बहुत पछताती है। क्योंकि जब उसे पुनर्जन्म नहीं मिलता है तो इसी कारण से वायब्रेशन्स बहुत निगेटिव रहते हैं क्योंकि बहुत बार वो वहीं विचरण करती है। अब वो हैल्प चाहती है लेकिन मांगे कैसे। उसके पास अब शरीर नहीं है। वो आवाज नहीं दे सकती। जैसा कि हम बहुत बार कहते आये कि कोई भी व्यक्ति जब सुसाइड करता है तो उसकी अंतिम स्थिति जो होती है दुःखभरी, बहुत अशांति की होती है। वो वैसी ही बनी रहती है। तो उसके वो वायब्रेशन्स घर में आते रहते हैं। इसलिए घर का वातावरण बड़ा ही गमगीन, त्रस्त रहता है। आपने राजयोग सीखा है।

तो मैं आपको राय दूँगा कि दिन में दो बार आधा-आधा घंटा अपने घर में मेडिटेशन करेंगे। और उस आत्मा के लिए शांति के वायब्रेशन्स देंगे। ताकि उसका चित्त शांत हो जाये। अब जरूरत इस चीज की है उसका चित्त शांत होगा तो आपका चित्त भी शांत होगा। उसको पुनर्जन्म मिलेगा तो आप भी निश्चित हो जायेंगे। जैसे घर का व्यक्ति कोई भटक रहा हो और उसको ठिकाना मिल जाये तो घर वालों का चित्त भी शांत हो जाता है, निश्चित हो जाते हैं। तो जब उसको ठिकाना मिलेगा तब आपके चित्त को भी चैन आ जायेगा। पहले 21 दिन करें। फिर 21 दिन करें और फिर 21 दिन करें। तीन बार 21-21 दिन, आप अपने घर में इस तरह के गुड वायब्रेशन्स, शांति के वायब्रेशन, प्युरिटी के वायब्रेशन फैलाने के लिए मेडिटेशन करें। लेकिन आप उस आत्मा के लिए कुछ पुण्य भी करें। और पुण्य में बहुत बड़ा पुण्य होता है कि भगवान को भोग लगवा देना उनके निमित्त। तो परमात्म ब्लैसिंग भी उसे मिलने लगती है और उसका चित्त भी शांत होने लगेगा। दूसरा उसके निमित्त पवित्र आत्माओं को, ब्राह्मण आत्माओं को ब्रह्मा भोजन खिला देना ये बहुत बड़ा पुण्य है। ये सब कार्य आपको अवश्य करने चाहिए।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड' और 'अवेकनिंग' चैनल





स्थिति को शक्तिशाली बनाने के लिए इतना करें...!

मुर्लियों से पावरफुल बातें लिखकर खुद को पावरफुल बनायें...

सेवाओं का बल भी स्थिति में बल भरता है। कुछ धारणाओं का बल भी हमारे योग के बल को नष्ट होने से बचाता है। धारणाओं का बल, जैसे 'मैं और मेरा', इसका त्याग। अगर ये दोनों अवगुण हैं तो जैसे हमारी शक्तियों के लिए हमारे अंदर लीकेज है। वो बहकर नष्ट होती रहेंगी। साथ में ज्ञान का बल, ये बात बहुत ही उपयोगी है। कइयों ने इसे यथार्थ समझा है और कर भी रहे हैं। मैंने तो इस बात को जीवन भर किया है इसलिए आपको कहता हूँ... ज्ञान की मुर्लियाँ रोज सुन-सुन कर उनमें से कुछ सुंदर बातें अलग से अपने पास नोट करें। पच्चीस सुंदर बातें लिखेंगे। दो पेज पर नहीं पच्चीस बातें, पच्चीस पेज पर लिखें। और वो भी मोटे-मोटे अक्षरों में। कुछ दिन तक रोज उन्हें पढ़ते जायें। स्थिति में बल भरता जायेगा। स्थिति अचल-अडोल होने लगेगी। मान लो ड्रामा का खेल चल रहा है और आपने बाबा की ये बात लिख ली है अपनी डायरी में कि 'ड्रामा बिल्कुल एक्ट्यूएट चल रहा है, ये बिल्कुल कल्याणकारी है, सभी अपना-अपना पार्ट बजा रहे हैं, यहाँ किसी का कोई दोष नहीं है' और आपने पढ़ लिया, तो हिलती हुई स्थिति अचल हो जायेगी। तो ऐसी कम से कम सोलह पावरफुल बातें सभी को लिखनी हैं। लिखनी खुद है, मुर्लियों से ढूँढकर। रोज

की मुर्लियों से। भले एक मास में लिखो, तीन मास में लिखो, वो बातें जो नशा चढ़ा दें, वो बातें जो स्थिति को श्रेष्ठ बना दें, वो बातें जो चित्त को शांत कर दें, जो भय को निकाल दें, चिंताओं को एकदम विराम लगा दें, ऐसी बातें सभी को लिखनी हैं। इनके बल से योग बल बढ़ेगा और स्थिति बहुत सुंदर हो जायेगी।

घर में बाबा का आह्वान करें...

ऐसा बहुत से भाई-बहनों ने अपने-अपने घरों में किया है। तो आप भी बापदादा का पाँच बार आह्वान किया करें। जो कर रहे हैं उनके घरों में बाबा के वायब्रेशन्स फैलते रहते हैं। अनेक बातें खत्म हो जाती हैं। सबको पता है, भगवान के वायब्रेशन्स जहाँ फैल जायें वहाँ कोई निगेटिविटी, वहाँ कोई भटकती आत्मा, कोई चिंताएँ और परेशानियाँ ज्यादा समय नहीं ठहरेंगी। इसलिए बाबा का आह्वान किया करेंगे। अब हम इस तरह बाबा का आह्वान करेंगे...। ले चलें बुद्धि को परमधाम...। बहुत एकाग्रता के साथ भगवान से मिलन का सुखद अनुभव। देखें परमधाम में सबसे ऊपर चमक रहे हैं ज्ञान सूर्य... जो हमारे खुदा दोस्त हैं। मन के सच्चे मीत... जिन्होंने आकर हमारी जन्म-जन्म की थकान मिटा दी है। जिन्होंने प्यार भरी दृष्टि देकर हमारे कष्ट हर लिये। जिसे हम युगों से ढूँढते थे, ये वही हैं... निराकार महाज्योति। चमक रहे हैं परमधाम में। बहुत प्यार से निमंत्रण दें... हे सर्वशक्तिवान... प्यार के सागर... अपना धाम छोड़कर हमारे पास आ जाओ। हमारे आह्वान पर बापदादा दोनों आ गये हमारे सम्मुख... बिल्कुल अपने सामने देखें... उनकी तेजस्वी किरणें चारों ओर फैल रही

हैं... दृष्टि दे रहे हैं... बोले बच्चे, मेरे से जो चाहे ले लो... अधिकार से मांग लें जो चाहिए... परम सद्गुरु प्रसन्न हैं...। सिर पर हाथ रखकर, तथास्तु कहकर वापिस गये अपने धाम। ये बहुत सुंदर अभ्यास सभी को रोज अपने घरों में पाँच-पाँच बार अवश्य करना है। आप उनसे जुड़े रहेंगे और घर में आह्वान की आदत पड़ जायेगी। कोई भी ऐसी-वैसी बात अचानक हो जाये, आह्वान की आदत उसके मदद का पात्र बना देगी। मुझे एक छोटा-सा अनुभव याद आ गया। कितनी मदद होती है बाबा की! हमलोग एक बार गये चाइना बॉर्डर की तरफ। बर्फ गिर गई। बर्फ गिर गई तो गाड़ी स्लिप होने लगी। ड्राइवर तो घबरा गया। जैसे ही स्लिप हो, और वो ब्रेक लगाये, गाड़ी अनकंट्रोल्ड घूमने लगे। एक जगह ऐसा आ गया, ब्रेक लगा दिया और गाड़ी गड्ढे में गिरने लगी लेफ्ट साइड में। और हम जो पाँच-सात उस बड़ी गाड़ी में बैठे थे, सबके मुख से एक साथ निकला बाबा... बाबा...। और आप हैरान होंगे, गाड़ी का लेफ्ट पहिया वहीं एक गड्ढा हुआ और उसमें धंस गया। गाड़ी रुक गई। एक सेकंड के अंतर से सब नीचे होते, मृत्यु निश्चित थी। लेकिन सबको एक साथ, मैं सोच रहा था कि देखो कितना सुंदर अवसर था, सबको एक साथ संकल्प आया बाबा...। ये भी नहीं कहा, बाबा आ जाओ। उतना भी मौका नहीं था। बाबा...। और सुनवाई हो गई। तो हमें ऐसी आदत पड़ जाये। अचानक कुछ हो जाये या होने लगे, क्योंकि जब प्राकृतिक प्रकोप शुरू हो जायेंगे तो सारा खेल अचानक चलेगा। पता ही नहीं अगले मिनट क्या हो जाये। ऐसे में अगर बाबा का आह्वान होगा, बाबा की पावरफुल स्मृति हो जायेगी तो अनेक वंडरफुल अनुभव होंगे। ये भी अपने पर विजय होगी।



बैरिया-उ.प्र.। माननीय उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मोर्य को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. समता बहन।



नैनीताल-उत्तराखण्ड। शिव जयंती के अवसर पर पूर्व विधायक एवं वर्तमान बीजेपी उम्मीदवार सरिता आर्य को ईश्वरीय सौगात व ओम शान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. नीलम बहन। इस मौके पर ओम प्रकाश भाई, शालीमार होटल के मालिक, सरिता आर्य, कर्नल सती तथा अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।



शिवली-कानपुर देहात(उ.प्र.)। 86वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती महोत्सव पर पूर्व चेयरमैन लल्लन बाजपेयी को ओम शान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. विमलेश बहन। साथ हैं ब्र.कु. रामबाबू भाई।



फरीदाबाद से.21सी-हरियाणा। 86वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती पर आयोजित कार्यक्रम में शिव ध्वजारोहण के पश्चात् उपस्थित हैं डॉ. महेन्द्र शर्मा, प्रेसीडेंट, आर.डब्ल्यू.ए., ब्र.कु. ज्योति बहन, ब्र.कु. हरीश तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।



नरवाना-हरियाणा। 'आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए नागरिक अस्पताल के एसएमओ डॉ. देवेन्द्र बिंदलेश, स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. स्वाति बिंदलेश, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सीमा, ब्र.कु. ममता, ब्र.कु. रेणु तथा ब्र.कु. मोना।



नई दिल्ली-पांडव भवन(करोल बाग)। 86वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती पर आयोजित कार्यक्रम में कैडल लाइटिंग करते हुए बायें से अजीजुर रहमान जी, इमाम साहब, करोलबाग जामा मस्जिद गुरुद्वारा रोड, स्वामी गुरु दास जी, गुरु गणेश्वर धाम ट्रस्ट दिल्ली, दिनेश दास जी, फादर, बैप्टिस्ट चर्च, करोल बाग, स्थानीय सेवाकेन्द्र की निदेशिका ब्र.कु. पुष्पा बहन, स्वामी विवेक मुनि जी, अध्यक्ष, अंतर्राष्ट्रीय महावीर जैन मिशन, सुरजीत डे, जस्टिस, नेशनल ह्यूमन राइट्स कमिशन, सुप्रीम कोर्ट ऑफ इंडिया, ब्र.कु. जगमोहन, मेरा बाबा रियल एस्टेट के मालिक तथा अन्य गणमान्य लोग।



पटना-बोरिंग रोड(बिहार)। महाशिवरात्रि के कार्यक्रम में शिव ध्वज फहराते हुए बिहार विधानसभा अध्यक्ष विजय कुमार सिन्हा, पटना सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. संगीता दीदी, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सविता बहन, रवि उपाध्याय, असिस्टेंट कमिशनर सुबोध भाई, गौतम भाई तथा अन्य।



मोतिहारी-बिहार। 86वीं त्रिमूर्ति शिव जयंती महोत्सव पर जिले के विभिन्न सामाजिक क्षेत्रों में उत्कृष्ट सेवा कार्य करने वाले सात भाई-बहनों देवराहा बाबा आश्रम के सचिव राम भजन, पर्यावरण के क्षेत्र में कार्य करने वाले केशव कृष्ण, मोतिहारी सिटीजन फोरम के अध्यक्ष वीरेंद्र जालान, चिकित्सा क्षेत्र से डॉ. हिना चंद्रा, डॉ. आर.एन. सिंह, डॉ. एस.एन. पटेल तथा भाजपा महिला जिला सेल अध्यक्ष वीणा मिश्रा को ब्र.कु. मोना बहन ने ईश्वरीय सौगात, ईश्वरीय साहित्य एवं प्रसाद भेंट कर सम्मानित किया। इस मौके पर ब्र.कु. अनीता बहन, ब्र.कु. विभा बहन, ब्र.कु. अशोक वर्मा तथा निवर्तमान नगर पार्षद आदि उपस्थित रहे।



कायमगंज-उ.प्र.। महाशिवरात्रि के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में महेश जोगी जी, नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमति रीता गंगवार, गायत्री परिवार संयोजक सुरेन्द्र गुप्ता, व्यापार मंडल अध्यक्ष संजीव कुमार, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मिथिलेश बहन तथा अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।

महाशिवरात्रि पर 'संत समागम' एवं 'आध्यात्मिकता से वैश्विक उत्थान' कार्यक्रम

एक मंच पर एकत्रित हुए सर्व धर्मप्रतिनिधि

फरीदाबाद-एन.आई.टी.(हरियाणा)। महाशिवरात्रि के उपलक्ष्य में आयोजित 'संत समागम एवं आध्यात्मिकता से वैश्विक उत्थान' कार्यक्रम में विभिन्न धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। साथ ही लगभग 150 लोगों ने शिरकत की। इस मौके पर संत श्री मुनिराजजी महाराज, ब्रज धाम सिद्ध पीठाधीश्वर ने कहा कि ओम् शांति का महामंत्र न केवल मन को शांत करता है बल्कि हमारे आसपास के वातावरण में भी शुद्ध सकारात्मक ऊर्जा प्रवाहित होती है। मोहम्मद समी उर रहमान नदवी, डिप्टी इमाम, मरकज मस्जिद ने कहा कि एक ही मंच पर सभी धर्मों के प्रतिनिधियों का



एकत्रित होना, यह ब्रह्माकुमारीज द्वारा उठाया गया बहुत सराहनीय कदम है। फादर जॉर्ज ने कहा कि यह मंच इस बात का गवाह है कि ब्रह्माकुमारी संस्थान सभी धर्मों को जोड़कर समाज में शांति स्थापित करने का बहुत सराहनीय कार्य कर रहा है। दिल्ली से आई ब्र.कु.

सपना दीदी ने शिवरात्रि के आध्यात्मिक रहस्य को स्पष्ट करते हुए कहा कि शिवरात्रि अर्थात् कलियुग की रात का महाविनाश और सतयुग की स्थापना के लिए भगवान शिव संगमयुग पर अवतरित होते हैं। और इस संगमयुग पर हमें वास्तव में अपने मनोविकारों को छोड़ने

का व्रत लेना है। इस अवसर पर विभिन्न संस्थाओं के लोगों को समाज में उत्कृष्ट योगदान देने के लिए सम्मानित किया गया। सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. उषा दीदी ने सभी अतिथियों का आभार प्रकट किया। इस मौके पर संत आचार्य राजेन्द्र जी, राष्ट्रीय अध्यक्ष, संत सुरक्षा मिशन, महामंडलेश्वर संत श्री प्रकाशानंद जी महाराज, महामंडलेश्वर संत श्री अर्जुन गिरि जी महाराज, महंत श्री ललित गिरिजी महाराज, नरेंद्र भाटिया, प्रेजिडेंट, गुरुद्वारा पंचायती, एनआईटी 5, मनमोहन भाटिया, प्रेजिडेंट, उजाला मित्र ग्रुप, रवि नागपाल, प्रेजिडेंट, शिव मंदिर संस्थान, पीर जगन्नाथ, कार्मेल कॉन्वेंट स्कूल की प्रधानाचार्या सिस्टर डाफने, हरीश रात्रा, प्रेजिडेंट, फाउंडेशन अगेंस्ट थेलासीमिया आदि गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

ऐसे पवित्र वायब्रेशन्स कहीं और महसूस नहीं हुए : राज्यमंत्री

वरखी दादरी-हरियाणा। ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र के शांतिपूर्ण और सात्विक वायुमंडल में पहुंचकर मुझे परम शांति का अनुभव हो रहा है। मैं समय प्रति समय ब्रह्माकुमारीज के कार्यक्रम में जाता रहता हूँ। जितने पवित्र वायब्रेशन्स मुझे यहाँ महसूस होते हैं ऐसे किसी भी कार्यक्रम में अनुभव नहीं होते। उक्त उद्गार ब्रह्माकुमारीज द्वारा 'आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के अंतर्गत महाशिवरात्रि पर आयोजित कार्यक्रम में कृषि व किसान कल्याण राज्यमंत्री जेपी दलाल ने व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि आज



किसानों के मनोबल और उन्हें आध्यात्मिक रूप से सशक्त बनाने में ब्रह्माकुमारीज अहम भूमिका निभा रहा है। उन्होंने आगे कहा कि भगवान शिव का ध्यान करके हम हर कार्य में सफलता प्राप्त कर सकते हैं और जीवन को बुराइयों से मुक्त

कर सकते हैं। सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. प्रेमलता बहन ने शिवरात्रि का आध्यात्मिक रहस्य स्पष्ट करते हुए कहा कि परमात्मा शरीर धारी मनुष्य नहीं बल्कि ज्योति स्वरूप, प्रकाश स्वरूप, शक्ति स्वरूप हैं। इस दिन हम शिवलिंग पर बेर और बेलपत्र

चढ़ाते हैं जो कि प्रतीक है अपने मन के वैर चढ़ाने का तथा तीन पते माना मन, वचन, कर्म में जो कड़वाहट आ गई है उसे समाप्त कर मन को श्रेष्ठ चिंतन से भरने का। उन्होंने बताया कि शिवरात्रि यादगार है ज्योति स्वरूप परमात्मा शिव के इस धरा पर अवतरण का। भगवान इस कलियुग के समय धरती पर आकर सर्व को सच्चा गीता का ज्ञान देते हैं। कार्यक्रम में एसडीएम की धर्मपत्नी बहन कविता, पंजाबी सभा के पूर्व अध्यक्ष वासुदेव आनंद, व्यापार मंडल के अध्यक्ष बलवान जी आदि गणमान्य अतिथियों सहित सैकड़ों भाई-बहनें उपस्थित रहे।

ई संवोष्ठी : 'युवा-ऊर्जा उमंग और उम्मीद के प्रतिबिम्ब' अपनी शक्ति को निर्माणात्मक कार्यों में लगायें युवा - संजय कुमार

नई दिल्ली-लोधी रोड। ब्रह्माकुमारीज द्वारा युवाओं के लिए 'युवा - ऊर्जा उमंग और उम्मीद के प्रतिबिम्ब' विषयक ई-संगोष्ठी में ब्र.कु. पीयूष भाई, जीवन प्रबंधन विशेषज्ञ, नई दिल्ली ने कहा कि आज सभी युवाओं को विवेकानंद के विचारों को अपने जीवन में उतारने की आवश्यकता है। जागो, उठो और तब तक चलते रहो जब तक तुम अपनी मंजिल पर न पहुँच जाओ। उन्होंने कहा कि आज हम यह संकल्प लें कि अपने जीवन को आदर्श बनायेंगे, अपने से बड़ों का सम्मान करेंगे और स्वयं को बुरी आदतों से दूर रखकर देश की प्रगति में सहायक बनेंगे। संजय कुमार, आईएसएस, अपर सचिव, आवासन एवं शहरी कार्य मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली ने कहा कि आज युवाओं के सामने दोहरी चुनौतियाँ हैं। पहले उन्हें स्वयं को पहचानना है, अपनी ताकत को पहचानना है, फिर उन्हें देश की सभ्यता और संस्कृति को पहचान कर उसमें चार चांद लगाने हैं। यदि सभी युवा

होली की फुहार के साथ धूमधाम से मनाया महिला दिवस

मथुरा-रिफाइनरी नगर(उ.प्र.)। 'आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के अंतर्गत अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर 'महिलाएं-नये राष्ट्र की ध्वजवाहक' एवं 'होली स्नेह मिलन' कार्यक्रम में प्रसिद्ध समाज सेविका एवं राष्ट्रपति द्वारा नारी शक्ति पुरस्कार से सम्मानित डॉ. लक्ष्मी गौतम ने समाज में महिलाओं के प्रति बदलते परिप्रेक्ष्य पर कई व्यवहारिक उदाहरण प्रस्तुत किए। बलदेव पब्लिक स्कूल की प्राचार्या डॉ.



अनीता सिकरवार ने वर्तमान परिदृश्य में महिलाओं की अग्रणी भूमिका पर प्रकाश डाला। सब डिवाइज्डनल मजिस्ट्रेट श्वेता सिंह, पीसीएस, किरण चौधरी, पीसीएस ने ब्रह्माकुमारीज द्वारा महिला सशक्तिकरण की दिशा में किए जा रहे कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। कार्यक्रम में साहित्यकार डॉ. अनीता चौधरी, मथुरा रिफाइनरी द्वारा संचालित सामाजिक संस्था वृन्दा क्लब की स्पोर्ट्स सेक्रेटरी रितु सिंह, आरोग्यदीप अस्पताल की निदेशिका डॉ. वर्तिका, भाजपा जिला उपाध्यक्ष डॉ. चारु जैन, आशीर्वाद हॉस्पिटल से डॉ. करुणा, डॉ. रश्मि, डॉ. अंशु, रिफाइनरी सीआईएसएफ इंस्पेक्टर मनक व अन्य साथी महिलाकर्मी, महिला थाना प्रभारी रुची त्यागी, दूरदर्शन से सीमा शर्मा एवं विजेता चतुर्वेदी आदि विविध क्षेत्रों में सराहनीय कार्य करने वाली महिलाएं शामिल रहीं। सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. कृष्णा दीदी ने सभी को शॉल पहनाकर व स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया। उभरती गीतकार हिमांशी पाल ने गीतों की सुंदर प्रस्तुति दी। संचालन मथुरा रिफाइनरी की संविदा मैनेजर हंसा परेता एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ. वर्तिका ने किया।

परमात्मा से जुड़ने का सर्वोच्च व उत्कृष्ट योग है 'राजयोग'

फरीदाबाद-से.21डी(हरियाणा)। ब्रह्माकुमारीज के वरदानी भवन में महाशिवरात्रि महोत्सव पर आयोजित 'सर्व धर्म सम्मेलन' में वैदिक धर्म की ओर से सहभागी स्वामी अग्निवेश जी ने कहा कि ईश्वर निराकार, सत्यम, अजन्मा, अयोनी व कल्याणकारी है तथा हम सभी प्राणियों का सबसे बड़ा धर्म मानवता का धर्म है। उन्होंने कहा कि राजयोग मात्र ऐसा योग है जो सर्वोच्च व उत्कृष्ट है जिसके द्वारा ही हम अपने कर्मों पर जीत प्राप्त करके परमात्मा से सम्बंध जोड़ सकते हैं। इस्लाम धर्म के प्रतिनिधि मुफ्ती मुस्तजाब उद्दीन ने कहा कि हम सभी के इबादत करने

महाशिवरात्रि पर 'सर्व धर्म सम्मेलन' का भव्य आयोजन सर्व धर्म प्रतिनिधियों ने किया सम्बोधित

का तरीका अलग हो सकता है लेकिन हम सभी एक खुदा के बंदे हैं। सिक्ख धर्म के प्रतिनिधि सरदार हरदीप सिंह ने एक ओंकार सतनाम अकालमूर्त... का अर्थ स्पष्ट करते हुए बताया कि परमात्मा किसी से वैर नहीं करता। सभी को समान प्यार करता है। वह



जन्म-मरण में नहीं आता है तथा उसे कभी काल नहीं खाता है। दिल्ली कैथोलिक चर्च के पादरी मोबिन मिसपिल्ड ने कहा कि दूसरों के दुःख को अपना दुःख समझ कर उनको सहयोग करना ही श्रेष्ठ धर्म है। फरीदाबाद सेवाकेन्द्र की मुख्य

संचालिका ब्र.कु. उषा दीदी ने कहा कि हम सब एक, हमारा पिता एक, विश्व एक और विश्व एक पिता की संतान है। अतः सारा संसार हमारा परिवार है। इस मौके पर आईटीएटी न्यायाधीश संदीप गोसाई ने सभी को शिवरात्रि पर्व की शुभकामनाएं दीं। ब्र.कु. रंजना दीदी ने संस्था की गतिविधियों से सभी को परिचित कराया। स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. प्रीति दीदी ने सभी अतिथियों का हृदय से आभार व्यक्त किया। मंच का कुशल संचालन माउण्ट आबू से आई ब्र.कु. डॉ. मेधावी दीदी ने किया।

यह संकल्प ले लें कि हम अपनी ऊर्जा केवल राष्ट्र निर्माण में ही लगायेंगे तो भारत देश पुनः प्रगति के पथ पर और तीव्र गति से चलने लगेगा। राजयोगिनी ब्र.कु. अनुसुइया दीदी क्षेत्रीय संयोजिका, युवा प्रभाग, नई दिल्ली ने कहा कि भारत जैसी भूमि जिसे देवताओं की भूमि कहते हैं, तीर्थ मानते हैं, उसमें आज वृद्धाश्रम जैसी व्यवस्थाओं का होना लज्जा जनक है। बच्चों को शुरू से ही अच्छे संस्कार दिए जाएं। युवाओं को हमेशा सकारात्मक चीजों का अनुसरण करने की प्रेरणा देनी चाहिए ताकि वे आगे बढ़कर देश का नाम रोशन कर सकें। साथ ही युवा अपने भावनात्मक स्वास्थ्य का ध्यान रखें, क्योंकि जब हम भावनात्मक रूप से कमजोर होते हैं तो हमारी समस्त ऊर्जा नष्ट हो जाती है। ब्र.कु. गिरिजा बहन, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ने कहा कि माता-पिता का बहुत अहम कर्तव्य हो जाता है कि हम अपने बच्चों के हित में घर में एक सकारात्मक वातावरण तैयार करें और बच्चों को शुरू से ही आध्यात्मिक मूल्यों के प्रति सचेत करें। हमें ये समझना होगा कि भले ही हम कितने ही व्यस्त क्यों न हों बच्चों के लिए तो हमें समय निकालना ही होगा। बच्चे आखिर देश का भविष्य हैं, उनके साथ रहना, उनकी जिज्ञासाओं को शांत करना, उन्हें आदर्श नागरिक बनाना हमारा ही तो कर्तव्य है।